Year-79

आपके पत्र

दीवाना का नया अंक मिला। वैसे तो यह अंक अच्छा था। परन्तु मोटू पतलू की रंगीन फिल्म को इस बार आपने ब्लैक एंड व्हाईट क्यों कर दिया? और हां! क्या आजकल आपने चिल्ली को किसी हिल स्टेशन पर भेज दिया है, जो कई अंकों से उसकी 'चिल्ली लीला' देखने को नहीं मिली कृपया चिल्ली लीला जरूर दिया करें।

अवतार सिंह बिट्टू—भटिण्डा

मैं गत एक वर्ष से दीवाना का नियमित पाठक रहा हूँ। दीवाना अंक २१ मिला, पढ़कर दिल खुश हुआ, वह लिखकर बताने में कम है। दीवाना में मुख्य रूप से 'सिलबिल पिलपिल' डाक्टर बने, पंचतन्त्र रीछपाल की कविता आदि सभी कुछ अच्छा लगा है।

रामचन्द्र शर्मा—आबूरोड (राज०)

मैं दीवाना का बहुत पुराना स्टूडेन्ट हूं। दीवाना अंक २१ वाँ बहुत इन्तजार करने के बाद मिला। 'सिलबिल पिलपिल' और 'मोटू पतलू' की रंगीन कहानी फाईल नं० ५५५ ज्यादा अच्छी नहीं रही। यदि ऐसी ही कहानी छपती रहीं तो आपका स्टूडेन्ट अमीन खॉन चिल्ली साहब से नाराज हो जायेगा। हर दीवाना में मैं घसीटा राम का काम बेहद पसंद करता हूं।

अमीन खान ...—मलूकपुर, बरेली सिटी

दीवाना अंक २० मिला, लेकिन बहुत इन्तजार किया तभी दीवाना अंक २० मिला। पढ़कर, मन में जो बेचैनी थी उसे चैन मिला। फिल्म पैरोडी 'सर तप गया' बहुत अच्छी लगी। मोटू-पतलू, सिलबिल-पिलपिल, बन्द करो बकवास, परोपकारी, मुसीबत नहीं है, आदि जबरदस्त रहीं।

बिजय सिंह सोलंकी—बीकानेर

अंक २१ देखकर निराशा ही हाथ लगी जबकि पाठकगण ऐसी कामना नहीं करते। सबसे ज्यादा निराशा मोटू-पतलू को रंगीन न देखकर हुई। मुझे आपसे एक शिकायत यह भी है कि आप पहेलियों की पुरस्कार राशि बहुत कम रखते हैं। तथा पहेलियों में कोई नवीनता नहीं लाते।

राकेश कुमार 'दुआ'—दिल्ली

दीवाना का नया अंक २१ एक दिन पहले प्राप्त हुआ इसके लिए आपको धन्यवाद। हमेशा की तरह ये अंक भी काफी अच्छा लगा और पढ़कर हँसे बिना नहीं रहा। इस अंक में सारे फीचर, चुटकुले, कवितायें, कार्टून वगैरहा-वगैरहा सब एक से बढ़कर एक थे। विशेषकर मुझे पंचतंत्र बहुत ही अच्छा लगता है। इस बार गरीब चन्द की डाक को देखकर दिल बहुत खुश हुआ लेकिन अपने प्रश्न को न देखकर दिल टूट सा गया। लेख देव आनन्द पर अच्छा लगा। मैं दीवाना का बहुत दिन से दीवाना हूँ जब मोटू यमराज के आफिस में जा फंसा था और उसी अंक में सिलबिल-पिलपिल बिजली चले जाने के कारण कंगारू को अपना चाचा समझ बैठे थे। मुझे अभी तक याद है कि वह अंक मेरी जिंदगी का सबसे पहला अंक था और उसी दिन से दीवाना पढ़ता चला आ रहा हूं।

मुन्ना बाबू विद्यार्थी—कानपुर-३

मैं दीवाना का नियमित पाठक हूं। दीवाना का नया अंक-२१ आज ही मिला, पढ़कर दिल खुश हो गया। विशेषकर ठोकर, फैंटम, परोपकारी, स्वर्णकेशी सवाल यह है एवं कवितायें काफी रोचक लगीं। मोटू-पतलू को रंगीन न पाकर मुझे दुःख हुआ। कृपया आप 'दीवाना' में रंगों की कटौती न करें। कृपया बतायें कि 'फ्रेंण्डस क्लब' में हम कितनी बार फोटो छपवा सकते हैं।

सत्यपाल वधावन कुक—कतरासगढ़

फोटो केवल एक बार भेजनी चाहिए ताकि दूसरे पाठकों का भी शीघ्र नम्बर आ सके। —सं०

मुख पृष्ठ पर

आस पडौस के लोग अगर
तुमको पढ़ने न दें दीवाना,
खुमैनी कहे बात पते की
मानो अगर इसका कहना।
सबको लाइन में खड़ा करो
फोका फायर कर के तुम,
आराम से पढ़ो दीवाना
जब तक उनके होश हों गुम॥

दीवाना

अंक : २६, १९ जुलाई से २५ जुलाई १९७९ तक
वर्ष : १५

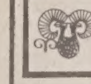
सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे
छमाही: २५ रु० वार्षिक: ४८ रु० द्विवार्षिक: ९५ रु०

साप्ताहिक भविष्य



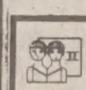
१९ जुलाई से २५ जुलाई १९७९ तक
पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा



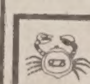
मेष : यह सप्ताह आपके लिए संघर्षमय भी है और दिलचस्प भी, विगत समय में किए कामों के शुभ अशुभ मिश्रित फल प्राप्त होंगे, लाभ बढ़ेगा, शत्रु पर विजय, अफसरों से मेल जोल, यात्रा में सुख परन्तु परेशानी बढ़ेगी।



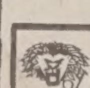
वृष : सप्ताह पहले से अच्छा है, मनोरंजन भरे वातावरण में दिन व्यतीत होंगे, शुभ कामों की ओर झुकाव रहेगा, कारोबार की स्थिति संभलेगी, यात्रा आसपास की, कोई अप्रिय घटना हो सकती है।



मिथुन : यह सप्ताह आपके लिए मिले-जुले फलों वाला है, कारोबार की दशा में एक नया मोड़ आ सकता है, रुका हुआ पैसा मिलने की आशा है, सुख साधनों पर व्यय, यात्रा सफल, चोट लगने का भय है।



कर्क : शारीरिक कष्ट, मन परेशान, हालात बिगड़े रहेंगे, अन्य दिनों में हालात ठीक चलेंगे, भाग्य भी साथ देगा परन्तु सफलता कठिन परिश्रम करने पर ही नसीब हो सकेगी।

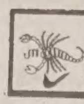


सिंह : संघर्षमय होने पर भी यह सप्ताह आपके लिए लाभप्रद कहा जा सकता है, परिश्रम सफल तो रहेंगे, परन्तु लाभ देर से मिलेगा, ऋण आदि लेने की चिन्ता, व्यय बढ़ेगा, धार्मिक कामों में रुचि।

कन्या : सावधानी एवं सूझबूझ से काम करने पर इस सप्ताह के दौरान आप उचित फल प्राप्त कर सकते हैं, जल्दबाजी से काम लेना ठीक नहीं, बड़ों का परामर्श लेकर चलें तो लाभ अच्छा होगा।



तुला : घर में किसी को चोट लगने या शारीरिक कष्ट आने का भय है, झगड़े आदि से परेशानी, सावधानी से रहें, अन्य दिनों में यात्रा भी सफल रहेगी और हालात भी साजगार चलेंगे।



वृश्चिक : यह सप्ताह है तो आपके लिए अच्छा परन्तु सफलता एवं लाभ उतना नहीं होगा जितना कि आप परिश्रम करेंगे। दौड़-धूप अधिक रहेगी, आय में वृद्धि, यात्रा लाभप्रद, घरेलू खर्चा बढ़ेगा।



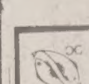
धनु : इन दिनों संघर्ष काफी आएगें और परिश्रम भी काफी करना पड़ेगा, फिर भी सप्ताह आपके लिए अच्छा रहेगा, लाभ बढ़ेगा, व्यापार भी सुधरेगा, शुभ अशुभ फल मिलते रहेंगे।



मकर : इस सप्ताह के दौरान हालात कुछ बिगड़ सकते हैं और परेशानियां भी बनीं रहेंगी, संघर्षपूर्ण होने पर भी यह सप्ताह लाभप्रद रहेगा, व्यापार की स्थिति संभलेगी, लाभ कुछ देर से मिलेगा।

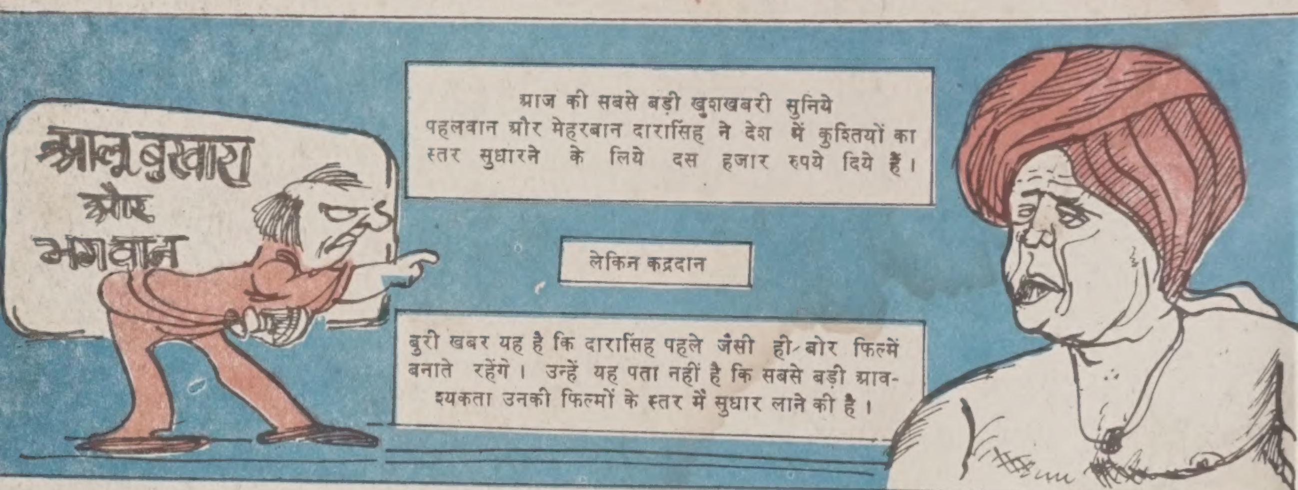


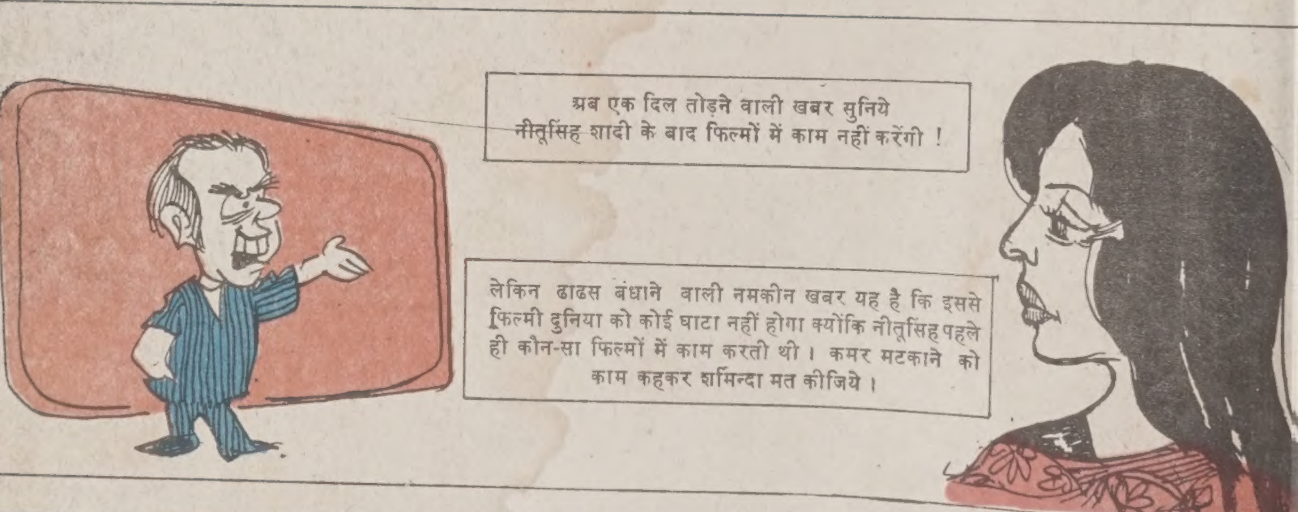
कुम्भ : समय ठीक नहीं, जल्दबाजी या गुस्से में काम न करें, यात्रा छोड़ दें, चोट आदि लगने का भय है, व्यय बढ़ेगा, अन्य दिनों में वातावरण अनुकूल रहेगा, कारोबार भी सुधरेगा, लाभ अच्छा होगा।

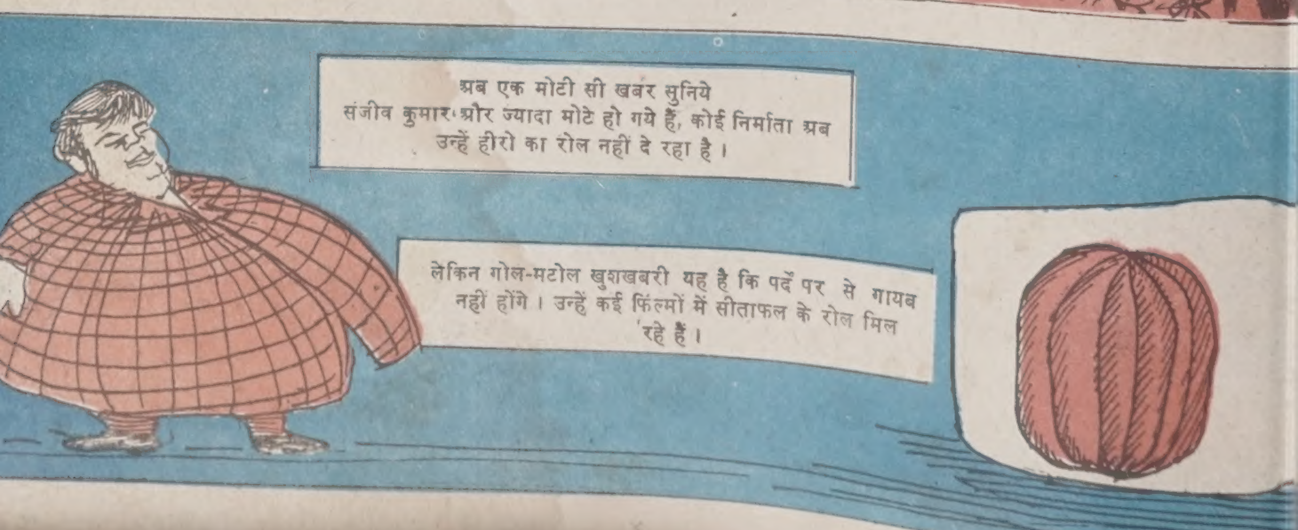


मीन : इस सप्ताह कारोबार एवं आर्थिक हालात में सुधार होता महसूस होगा, परन्तु साथ-साथ संघर्ष भी काफी करना पड़ेगा, शत्रु एवं रुकावटों पर विजय पाएंगे, नातेदारों से मेल-जोल।

फिल्मों की
अच्छी खबर बुरी खबर








पंचतंत्र
आज की ताजा खबर
आज के अखबार में क्या खबर है रीछपाल सिंह ?
बड़ी बुरी खबरें हैं। दो लंगूरों ने चाकू दिखा कर एक गिलहरी से पांच अखरोट छीन लिये। एक लोमड़ी अपने बालों में मिट्टी का तेल छिड़क कर मर गई। तीन भेड़ियों ने जंगल का खजाना लूट लिया। एक कब्बा कबूतरी का अपहरण करके ले भागा।
जंगल की कानून और व्यवस्था बहुत खराब हो रही है। चारों तरफ गुँडा-गर्दी का राज है। हमारे जैसे शरीफ जानवरों का बाहर निकलना मुश्किल हो गया है।
सही बात है।
यह जो सामने पेड़ है इसमें पहले शहद के बहुत से छत्ते हुआ करते थे। डैडी हर साल कई लीटर शहद निकालकर लाते थे लेकिन अब सारी मक्खियां भाग गयी हैं।
जंगल में जानवरों की संख्या बहुत घटती जा रही है। इसलिए तो चारों तरफ बेकारी और गुण्डागर्दी फैल रही है।
और जंगल के जानवरों की आबादी घटने का क्या कारण है ? एक ही कारण है वह यह कि इंसानों की आबादी बढ़ रही है। इंसान अपना पेट भरने के लिए जंगल उजाड़ रहा है।
जानवरों को मार रहा है। पेड़ काट रहा है। हम सब का जीना दूभर कर रखा है।
अगर ऐसे ही चलता रहा तो आगे चल कर क्या होगा ?
जंगल के जानवर समाप्त हो जायेंगे और दीवाना के पाठक पंचतंत्र पढ़ने से वंचित हो जायेंगे।
शिक्षा—इंसानों की आबादी का बढ़ना मनुष्य के लिए ही नहीं जानवरों के लिए भी समस्या बन गया है।

काका के कारतूस

प्रश्न 'दीवाना' के दीवानों के, उत्तर काका हाथरसी के



ओम प्रकाश, इन्द्रलोक, दिल्ली-३५

प्र० : कुछ लड़कियाँ सीधे-सादे लड़कों को देखकर उनका मजाक क्यों उड़ाती हैं ?

उ० : इसका उत्तर लड़कियां, हमको रहीं बतायें।
भोला लड़का आजकल, उल्लू समझा जाय ॥

अभय कुमार बड़कुल, बीना (म० प्र०)

प्र० : माँ, बहिन और बीबी इन तीनों में किसका प्रेम श्रेष्ठ होता है ?

उ० : कई किस्म हैं प्रेम की, मैया करे दुलार।
बहिन करती स्नेह तो, पत्नी करती प्यार ॥

राजेश पप्पू, माधोपुरी, लुधियाना

प्र० : प्यार की दीवार को पक्का करने के लिए किस चीज का प्रयोग करना चाहिए ?

उ० : त्याग भावना का लगे, यदि उसमें सीमेंट।
प्यार यार पक्का बने, होय न ऐक्सीडेंट ॥

पवन कुमार, 'बैरागी', इन्दौर (म० प्र०)

प्र० : इश्क के सेण्डिल अच्छे होते हैं या शादी के बेलन ?

उ० : सीधी-सादी बात है, क्यों करते हो तर्क।
दोनों चखकर देख लो, मिल जाएगा फर्क ॥

शिबनलाल खत्री, रायपुर (म० प्र०)

प्र० : दुनिया में सबसे सुखी जिन्दगी कौन जीता है ?

उ० : सुख के कई प्रकार हैं, सबमें है गुण-दोष।
सच्चा सुख उसको मिले, जिसके मन सन्तोष ॥

धर्मेन्द्र कुमार दुर्गा, रायपुर (म० प्र०)

प्र० : हमने अपने यहां कुश्ती प्रतियोगिता रखी है, आप उसमें भाग ले सकते हैं क्या ?

उ० : कोई सत्तर वर्ष का, ढूंढ़ लीजिए मल्ल।
ताल ठोककर लड़ेंगे, होय समस्या हल्ल ॥

नारायण बाधवानी, रायपुर (म. प्र.)

प्र० : मनुष्य को शांति किस प्रकार मिल सकती है ?



उ० : दुख के कारण हैं सभी, धन, धारणी, औलाद,
शांति मिलेगी त्याग से, या मरने के बाद।

शंकरशर्मा 'नाजुक दिल', रोहतक

प्र० : जिन्दगी क्या है काका ?

उ० : जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है, यह जानिए।
जो जिएं मनहूसियत में, उनको मुर्दा मानिए ॥

राकेश कुमार पांडे, बड़गांव

प्र० : प्यार और दिलदार में क्या अन्तर है ?

उ० : दिल, दिलवर, दिलदार के बीच फंसा है प्यार।
पकड़ सके तो पकड़ ले, प्रेमी थानेदार ॥

अब्दुल अजीज, जी० ए० फरिश्ता, रायपुर (म० प्र०)

प्र० : काकाजी, नौ दो ग्यारह का प्रयोग कैसे होता है ?

उ० : भोर हुआ तो सेठजी, लगे मचाने शोर।
नौ दो ग्यारह हो गए, माल चुराकर चोर ॥

सुदीप जौहरी, दुर्ग (म० प्र०)

प्र० : कभी आप नाराज हो जाते हैं तो काकी क्या करती हैं ?

उ० : नाराजी के भेद को, और न जाने कोइ।
खटपट दिन में होइ तो सुलह रात में होइ ॥

अमरेश शंकर: धनबाद (बिहार)

प्र० : काकाजी, आपको प्यार चाहिए या पैसा ?

उ० : कलियुग में पैसा प्रमुख, पैसे का संसार।
पैसा हो यदि पर्स में, भागा आए प्यार ॥

श्रीपाल जैन, इम्फाल (मणिपुर)

प्र० : अपनी दाड़ी की लम्बाई क्यों नहीं बढ़ने देते आप ?

उ० : लम्बी दाड़ी हमें नहीं लगती है अच्छी।
लटक-लटक कर झूला झूलें बच्चे बच्ची ॥

चन्द्रशेख गोस्वामी, हरिद्वार

प्र० : काकी के अलावा आपकी कोई 'वो' भी है क्या ?

उ० : काकी भृकुटी तानती, आती है जब वोऽ।
कहती है फटकार कर, इमीडिएटली गोऽ ॥

चन्द्रभान अनाड़ी, जबलपुर (म० प्र०)

प्र० : औरतें प्रायः बहादुर मर्दों को ही पसन्द क्यों करती हैं ?

उ० : वीर बहादुर पति मिले, चाहें सभी जरूर।
बंध जाए जब 'अनाड़ी' हो जाती मजबूर ॥

टी० के० मजूमदार, खगोल (पटना)

प्र० : मरते समय मुँह में गंगाजल क्यों डाला जाता है ?

उ० : अन्त समय में इसलिए, गंगाजल दें डाल।
झूठ, कपट औ' पाप का पच जाए सब माल ॥

दीपक चुटानी, माडल टाउन, करनाल

प्र० : चौराहे पर दो लड़कियाँ, हमको छोड़कर एक दूसरी से विपरीत दिशा में चल दें तो ?

उ० : बंट जाओ दो भाग में, मन में राखो धीर।
दिल हो इसके साथ तो, उसके साथ शरीर ॥

अनादि चक्रधर, नई दिल्ली-१४

प्र० : पार्टी से निकाले जाने के बाद राजनारायण क्या करेंगे ?

उ० : गड़बड़ इतनी देश में, पैदा करें हजूर।
फिर से लेने के लिए, पार्टी हो मजबूर ॥

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।	**काका के कारतूस** दीवाना साप्ताहिक ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

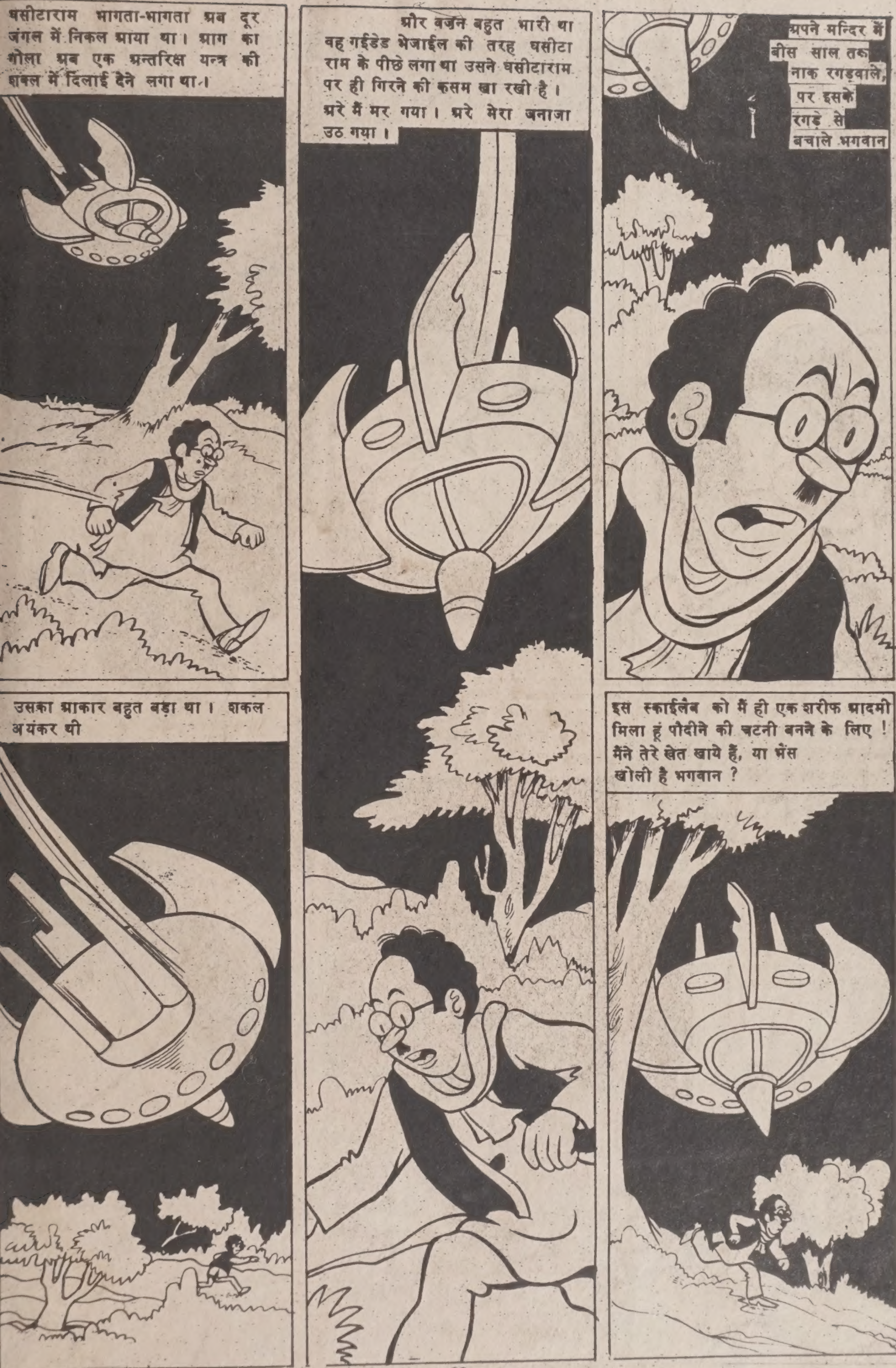


टी. वी. पैरोडी
साक्षातकार
आवास व निर्माण मंत्री से
जैसे कि आप जानते ही हैं हम हर महीने आपकी मुलाकात एक केन्द्रीय मंत्री से करवाते हैं। मंत्री महोदय पत्रकारों के सवालों के जवाब देते हैं। आज हमारे स्टूडियो में पधारे हैं···।
केन्द्रीय आवास तथा निर्माण मंत्री श्री शिकन धर बख्त जी। इनसे पहला सवाल मेरे साथी पत्रकार, बिन्दुस्तान के श्री फोकट लाल करेंगे।
सिकनधर बख्त साहब, जनता पार्टी ने चुनावों के तुरन्त बाद घोषणा की थी कि उसके मंत्री छोटे मकानों में रहेंगे। लेकिन उस घोषणा पर कोई अमल नहीं हुआ। मंत्री लोग उन्हीं आलीशान कोठियों में रह रहे हैं।
आपका कहना ठीक है ! लेकिन इस बीच अब एक समस्या पैदा हो गई है। मंत्रीगण पहले पतले थे लेकिन अब सरकारी माल खाकर मोटे हो गये हैं।छोटे मकान के दरवाजों से नहीं निकल पायेंगे।
जनता मंत्रियों की पत्नियों की शिकायत है कि उन्हें चाट-पकौड़ी और गोल गप्पे कोठियों के पास नहीं मिलते उन्हें इन चीजों के लिए कनाट प्लेस जाना पड़ता है। आपके मंत्रालय ने कुछ किया ?
इस काम के लिए राज-नारायण के नेतृत्व में हम बोट क्लब पर विशाल रैली करने वाले हैं।
सिकनधर साहब, आप लोगों ने एक और भी वादा किया था। एमरजेन्सी में जिन झुग्गी-झोंपड़ी वालों को जमुना पार की बस्तियों में भेजा गया था उनके बारे में आपने कहा था उन्हें वापिस लाकर वहीं बसाया जायेगा जहां से उन्हें खदेड़ा गया था। लेकिन सत्ता में आने पर वह वापिस नहीं लाये गये?
हम तो अब भी उन्हें वापिस लाना चाहते हैं लेकिन इसमें भी एक अड़चन है। हमें पता लगा है जब से वह लोग वहां गये हैं वहां के रहने वाले कुत्ते और गीदड़-सियार उनके मित्र बन गये हैं। कुत्तों को वहां रहने वालों के घरों से खाना मिलता है। अगर उन सभी को वापिस दिल्ली लाया गया तो उन कुत्तों और गीदड़-सियारों के साथ बड़ा अन्याय होगा।
और यह तो सबको पता है कि दिल्ली में मकानों की बड़ी कमी है। यहां लाखों मकानों की जरूरत है लेकिन आप साल में केवल आठ हजार मकान ही बना पाते हैं। इस समस्या को आप कैसे हल करने की कोशिश कर रहे हैं?
इस बारे में हमें यह याद रखना चाहिए कि हम बन्दरों की औलाद हैं दिल्ली में पेड़ बहुत हैं। जब तक मकान नहीं बन जाते तब तक लोग पेड़ों पर रह सकते हैं।
इसी के साथ हमारा आज का कार्यक्रम समाप्त होता है अगले महीने हम आपके सामने···।
माफ कीजिए समय कम होने के कारण आप पूरा नहीं सुन सके।


मोटू पतलू
अन्तरिक्ष में तैरती अमरीका की स्काइलैब फेल हो चुकी है। इस लेबॉट्री का वजन पिच्यासी टन है। यह भारी और लम्बी चौड़ी लैबॉट्री धरती पर जहां भी गिरेगी, भारी तबाही मचायेगी। संसार में इसके गिरने की जो बैल्ट बताई गई है उसमें भारत का मध्य भाग भी सम्मलित है। अमरीका ने इसकी तबाही का बदला चुकाने का वादा किया है, पर इस वायदे पर भी कौन इतनी आसानी से बेमौत मरना चाहेगा। दीवाना का यह अंक छपने के लिए प्रैस में जाने वाला है। इस समय करोड़ों भारत वासियों पर मौत के साये मंडरा रहे हैं। कोई नहीं जानता, कौन कब स्काईलैब की लपेट में आकर मौत की नींद सो जाएगा।
मुझे तो लगता है। मेरी हर साँस आखरी साँस है। कौन जाने कब स्काईलैब यहाँ गिर पड़े।
मेरी तो आंखें आसमान पर लगी रहती हैं। पता नहीं कब मौत का पैगाम आ जाए।
तुम क्यों इतना परेशान हो रहे हो। हम जहाँ रह रहे हैं, वह जगह तो स्काईलैब के गिरने की बैल्ट से दूर है।
दूर क्या और नजदीक क्या ? जिस स्काईलैब पर किसी का नियंत्रण नहीं वह रास्ता बदल कर कहीं भी गिर सकती है अमरीका के वैज्ञानिकों ने बैठे बिठाये मुसीबत कर दी।
पिछले दिनों पाकिस्तान में स्काईलैब का एक टुकड़ा जिस जगह गिरा वह क्या बैल्ट के अन्दर है ?
इसका मतलब है हम में से कोई भी सुरक्षित नहीं। स्काईलैब कहीं भी और किसी भी समय गिर सकती है। अमरीका के साइंसदानों के बस का कुछ नहीं। वे मौत के ऐसे भयानक तूफान को अन्तरिक्ष में तो भेज सकते हैं। पर अब न इसे अन्तरिक्ष में ही नष्ट कर सकते हैं और न गिरते समय इसकी दिशा समुद्र की ओर मोड़ सकते हैं।
पर सुना है आज कल लखनऊ में योग आचार्य रमाकाँत मिश्रा योग साधना और मंत्र उच्चारण से स्काईलैब को धरती पर गिरने से रोकने या अपनी मरजी के किसी उजाड़ स्थान पर गिराने की कोशिश कर रहे हैं।
या
से योगाचार्य कर रहे हैं।
इनमें से एक हैं, योगाचार्य मोरारजी देसाई। योग साधना में भगवान से इनकी प्रार्थना है :
हे भगवान, स्काईलैब को तो चौधरी या नारायण पर गिरा दे !


दूसरी ओर श्री राजनारायण अपने यमराज नारायण से कह रहे हैं।
ओ मेड-इन-अमरीका स्काईलैब, मैड-बाई-आर० एस० एस० मोरारजी देसाई पर गिरे ताकि मैं गिरा हुआ उठ सकूं।
चौधरी चरण सिंह की प्रार्थना है........
हे प्रभु, स्काईलैब को चाहे किसी श्री नारायण पर गिराओ, पर मेरी गद्दी बचाये रखना।
और देश की दुखी जनता की फरियाद है।
हे भगवान ! तूने हम पर जयप्रकाश नारायण लाद दिया इससे बड़ी और कौन सी स्काईलैब गिराना चाहता है हमें तबाह करने के लिए ?
दूसरी ओर दीवाना के हास्य कलाकार हैं जो योग आचार्य बन कर योग साधना तो नहीं कर रहे हैं। पर भगवान से प्रार्थना करने में यह भी किसी से पीछे नहीं हैं :
हे भगवान ! स्काईलैब किसी कब्रिस्तान पर न गिरे। वहां मेरे पुराने मरीजों के आराम में बाधा पड़ेगी।
हे प्रभु ! स्काईलैब अगर गिरे, तो मोटू पतलू के घर का पता मुझ से पूछ ले।
हे भगवान स्काईलैब न किसी दोस्त पर गिरे न दुश्मन पर। तू सब नीचे वालों की रक्षा कर ऊपर वाले।
भगवान इसमें क्या करेगा। मनुष्य के ऊपर यह मुसीबत मनुष्य की लाई हुई है।
विज्ञान की उन्नति ने मनुष्य को कहीं से कहीं पहुंचा दिया है। यह मानना ही पड़ेगा। विज्ञानिकों ने इस अन्तरिक्ष प्रयोगशाला को मनुष्य जाति की भलाई के लिए स्पेस में भेजा था। अब भलाई में से बुराई और बुराई में से भलाई तो निकलती ही रहती है।


क्या आईडिया मारा है। बुराई में से भलाई और भलाई में से बुराई। मतलब है, यदि स्काईलैब यहाँ गिरे और एक खूबसूरत सी बुराई यह हो कि मोटू पतलू उसके नीचे दबकर मारे जाए। तो उसकी एक भलाई यह हो सकी है कि स्काईलैब की मशीनों में जो हीरे लगे हैं वे मुझे मिल जाये। और उनके पुर्जों में लगी बहुमूल्य धातुओं का मालिक मैं बन जाऊं।
तभी उन्होंने खिड़की में से झांक कर देखा……दूर आकाश में आग का एक बड़ा सा गोला चमक रहा था।
आ गई स्काईलैब लगता है, यहीं गिरेगी
आग का गोला अब और बड़ा होता जा रहा था। और अपने पीछे एक चमकीली लकीर छोड़ता हुआ तेजी से धरती की ओर आ रहा था। हीरे और बहुमूल्य धातु पाने की खुशी अब घसीटाराम के चेहरे से गायब थी। अब उसे लग रहा था, जैसे किसी ने उसी की मौत की घंटी बजा दी है।
मोटू पतलू के घर की खिड़की से छलांग लगा के घसीटाराम अब वहां से भाग जाना चाहता था।
घसीटाराम अब सड़क पर भागा जा रहा था। आकाश से गिरता हुआ आग का गोला अब और बड़ा होता जा रहा था। और बहुत तेजी से नीचे आ रहा था।


घसीटाराम भागता-भागता अब दूर जंगल में निकल आया था। आग का गोला अब एक अन्तरिक्ष यन्त्र की शक्ल में दिलाई देने लगा था।
और वजन बहुत भारी था वह गईडेड भेजाईल की तरह घसीटा राम के पीछे लगा था उसने घसीटाराम पर ही गिरने की कसम खा रखी है।
अरे मैं मर गया। अरे मेरा जनाजा उठ गया।
अपने मन्दिर में बीस साल तक नाक रगड़वाले, पर इसके रगड़े से बचाले भगवान
उसका आकार बहुत बड़ा था। शकल भयंकर थी
इस स्काईलैब को मैं ही एक शरीफ आदमी मिला हूं पौदीने की चटनी बनने के लिए ! मैंने तेरे खेत खाये हैं, या भैंस खोली है भगवान ?

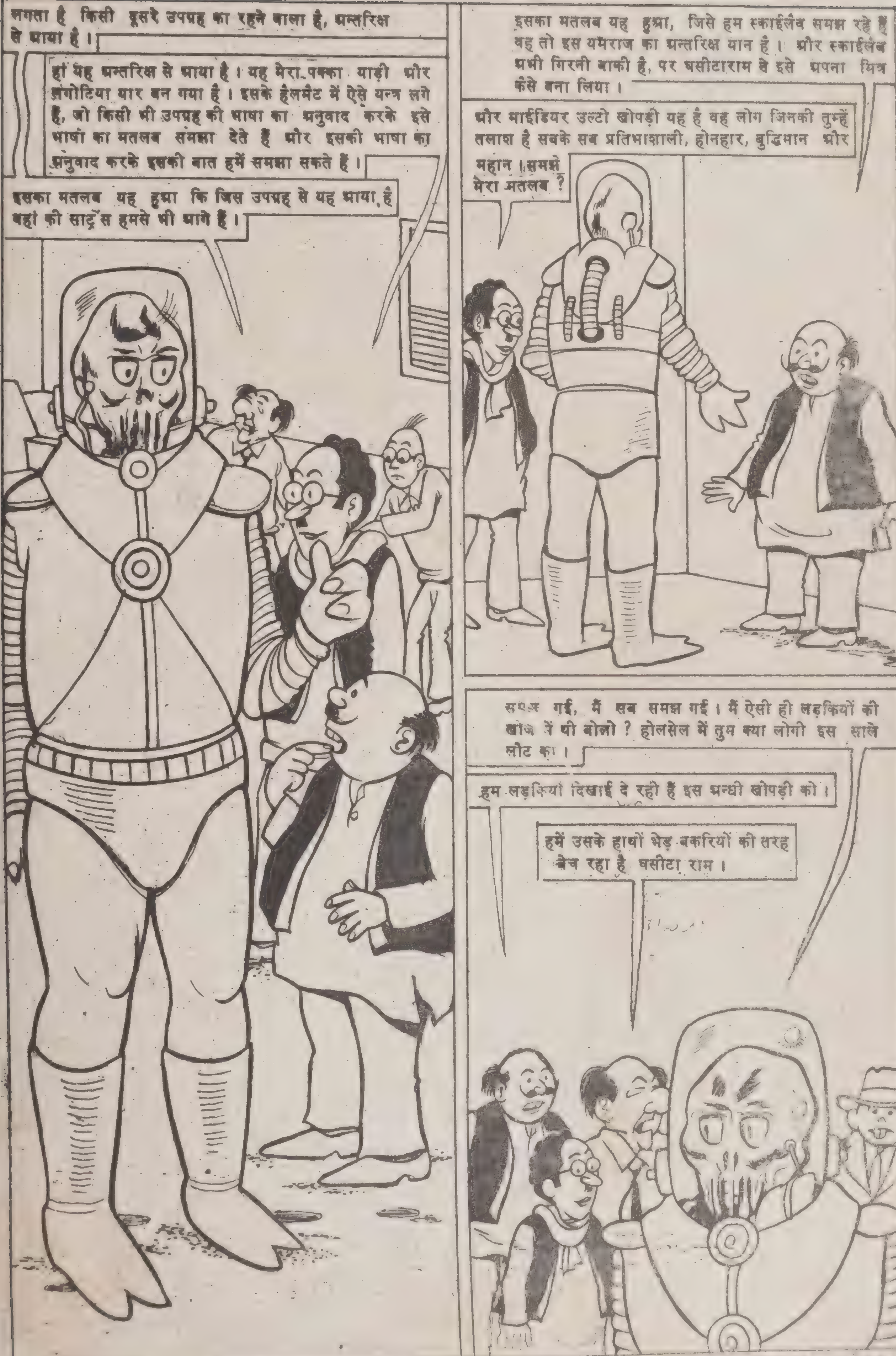


तभी घसीटाराम के पाँव को ठोकर लगी और वह लुढ़क गया।
मैं मर गया हूं, क्या मुझे स्काईलैब ने कुचल दिया है ?
नहीं मैं तो जीवित हूं। मेरे पीछे यह अजीब सी आवाजें कैसी हैं ?
घसीटाराम ने पीछे मुड़कर देखा तो उसकी चीख गले में अटकी की अटकी रह गई। वह बच गया था पर मौत अब भी उससे बहुत दूर नहीं थी।
इतनी बड़ी स्काईलैब ! इतनी भयंकर और जटिल हनुमानचालीसा का जाप कर ले घसीटाराम।
जय हनुमान ज्ञान गुण सागर।
जै कपीस तिहुंलोक उजागर॥
और देवता चित्त न धरई।
हनुमत इसे सर्ब सुख करई॥
संकट हरे मिटे सब पीरा।
जो सुमिरैं हनुमत बलबीरा॥
भूत पिशाच निकट नहिं आवैं।
महाबीर जब नाम सुनावैं॥


भ...य...भूत पिशाच । भ...य...भूत-भूत भूत ?
दो अजीब हाथों ने घसीटाराम को पकड़ा तो वह अधमरा और पागल सा हो गया था ।
दूसरी ओर मोटू पतलू और उनके दूसरे साथी परेशान थे ।
मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूं । वह स्काईलैब है जो उधर गिरी है ।
ऊपर से आग का गोला सा नीचे गिरा । और फिर एक अन्तरिक यन्त्र में बदल गया ।
घसीटाराम उससे बचने के लिए भाग रहा था । और मैंने देखा वह स्काईलैब घसीटा राम पर गिरने के लिए उसका पीछा कर रही थी ।
चलो चलकर देखें ? घसीटाराम का क्या बना । उधर पास के जंगल में गिरी है स्काईलैब ।
लगता है स्काईलैब टूटी नहीं है, साबत है ।
कमाल हो गया, इतने ऊपर अन्तरिक्ष से गिरी और टूटी नहीं ।
जरा पास चलकर देखो । अब इससे कैसा डरना
दरवाजा खुला है । अन्दर चले जाओ ।
स्पेस लैबाट्री क्या है अच्छा खासा अन्तरिक्ष यान है ।
स्काईलैब एक प्रकार का अन्तरिक्ष यान ही तो होती है ।



कितनी जटिल मशीनें लगी हैं।
इसके कुछ इंजन अब भी चालू हैं। अमरीकी वैज्ञानिकों का कहना है कि स्काईलैब खराब हो चुकी है। पर मुझे तो यह बिलकुल ठीक ठाक और चालू हालत में जान पड़ती है।
हम अनाड़ी हैं, हमें क्या पता चालू है या खराब है! शुक्र मनाओ इसने यहां गिर कर खून खराबा नहीं किया।
कौन कहता है नहीं किया घसीटाराम का खून क्या पानी था? जिसे इस स्काईलैब ने कुचलकर मलियामेट कर दिया है।
बेमौत ही मारा गया मोतियों वाला, अपने बचाव के लिए दौड़धूप तो बहुत की बेचारे ने की पर भगवान की मर्जी के आगे किसकी चलती है।
चलो भारत सरकार के अधिकारियों को सूचना दें कि वह अमरीका वालों को बता दे कि उनकी स्काईलैब यहां गिरी है।
चलते-चलते मोटू पतलू अपने मकान के आगे से गुज़रे तो जूड़ो मास्टर खड़ा था।
घसीटाराम स्काईलैब के नीचे कुचल कर मारा गया। तुम्हें पता है इस बात का।
घसीटाराम अपने किसी नये मित्र को लेकर आया है; और तुम्हारे घर में तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है, क्या तुम्हें पता है इस बात का
कौनसा नया मित्र—जरा अन्दर चल कर देखें।
अन्दर पहुंचे तो उनके सामने जो दृश्य था उससे उनकी आंखें फटी की फटी रह गई।
मार दिया पापड़ वाले ने, यह तो नहीं मरा है, लगता है अब हम मारे जायेंगे।
मौत के फरिश्ते को पकड़कर लाया है कहीं से।



इस फन्नेखां कहानी का अगला भाग आगामी अंक में देखिये।

नया धारावाहिक उपन्यास

ठोकर

-लेखिका संगीता

भाग — अन्तिम

'यह आदमी आपका काम कर सकता है।' सेल्ज गर्ल ने कहा, 'इन्टरमीडिएट है और इसे काम की जरूरत भी है।' यह कह कर सेल्ज गर्ल घूमकर वापस चली गई।

'बैठ जाओ—।' सेठ ने कहा।

विनोद बैठ गया···कुछ क्षण बाद सेठ बोला—

'दस रुपये रोज मिलेंगे···लेकिन काम केवल एक ही सप्ताह का है।'

'मुझे स्वीकार है।'

'नकली खाते बनाने हैं···दो वर्ष की आय के!'

'लेकिन मैं खाते का काम नहीं जानता।'

'फिर अन्दर क्यों चले आए?' सेठ ने क्रोध से कहा।

'मुझे क्या मालूम था कि कौन-सा काम है—वैसे जानता होता तो भी जाली खाते कभी नहीं भरता।'

सेठ नाक, भौंह सुकोड़ कर रह गया और विनोद बच्चे को संभाले हुए दुकान से बाहर निकल आया। सेल्ज गर्ल ने उसे रोकने का प्रयत्न भी किया किन्तु वह रुका नहीं लगता था, वह लड़की कुछ प्रभावित सी हो गई थी···न जाने उससे या उसकी गोद में सुन्दर बच्चे से—। बाहर आकर विनोद ने थूकने का प्रयत्न किया किन्तु उसका गला बिल्कुल सूख चुका था···उसे बड़ी तीव्र भूख लगी थी।

गिरता-पड़ता वह बाजार से निकला और एक ऐसे स्थान पर पहुंच गया जहां सड़क के दोनों किनारे प्राइवेट बसें खड़ी थीं···शायद कोई बस अड्डा था···अब उसके पांव आगे नहीं बढ़ पा रहे थे···वह एक खंभे से पीठ लगाकर वहीं खड़ा हो गया···दोपहर हो चुकी थी···बच्चा भी भूख से रोने लगा था···विनोद ने बड़े निर्बल स्वर में समझाने का प्रयत्न किया लेकिन वह मम्मी-मम्मी पुकारता हुआ विलख-विलखकर रोने लगा था···विनोद का दिल भर आया···बच्चे के स्वर में इतना दुःख था कि उससे सहन नहीं हुआ और उसने बच्चे को जोर से लिपटा लिया···एक मासूम बालक मां से बिछुड़ गया था···और वह मिला भी तो विनोद को जिसके पास फूटी कौड़ी नहीं···जो स्वयं समय की चक्की में पिस रहा था।

उसके पास ही एक बस आकर रुकी और कुछ सवारियां उतरीं···बाद में एक सूटिड-बूटिड आदमी उतरा और इधर-उधर देखकर बोला—

'अरे···कोई है···मजदूर?'

विनोद जल्दी से उठा और उठते ही गिरते-गिरते बचा···इस समय उसकी टांगों में एक अनजानी-सी शक्ति स्वयं ही सिमट आई थी।

'कहिए साहब क्या काम है?' विनोद ने झट भागकर उसके पास आते हुए पूछा।

'सामान उतरवाना है मोटर से—।'

'मैं उतारता हूं साहब।' विनोद ने जल्दी से कहा।

उसने बच्चे को बहलाकर मोटर की ही एक सीट पर बिठा दिया और जल्दी से बस की छत पर जा चढ़ा···पांच नग थे जिन्हें उतारते समय विनोद ने सोचा कि एक बार भी गिर गया तो उठेगा नहीं···सामान उतारने का एक रुपया उसे मिल गया···उसने भगवान का शुक्र अदा किया···फिर एक हलवाई की दुकान से अपने और बच्चे के लिए कुछ खाने को लिया और एक पेड़ के नीचे पत्थर पर बैठकर दोनों खाने लगे···विनोद बड़े स्नेह से बच्चे को देखे जा रहा था···उसे सहसा विचार आया कि उसका छोटा भाई प्रमोद भी तो इसी आयु का इतना ही मासूम है···फिर उसका ध्यान घर की ओर चला आया···दूसरे ही क्षण उसने इस विचार को मस्तिष्क से झटक दिया और बच्चे को गोद में लेकर प्यार करने लगा। खाना खाकर थोड़ी देर उसने आराम किया और फिर बच्चे को उठाकर उसी बस अड्डे की ओर चल पड़ा···वहां उसी खम्भे के पास बैठकर आने वाली मोटरों की प्रतीक्षा करने लगा···उसने बच्चे को खेलने के लिए एक बैलून खरीद दिया था···शाम तक दस बारह बसें आईं और कुछ बसों से सामान उतारने का उसे चांस मिल गया···सामान उतारने वाले वहां दो चार और भी मजदूर थे···शाम तक उसकी जेब में लगभग साढ़े तीन रुपये की रेजगारी थी···और वह पहले दिन की कमाई से संतुष्ट था।···उसने रात को पेट भरकर खाना खाया···बच्चे को दूध पिलाया और रात को उसी पार्क में जाकर सो गया।

इसी प्रकार बसों से बोझ ढोते हुए एक सप्ताह बीत गया···अब उसने रोज का खर्चा निकालकर पांच-सात रुपये बचा भी लिए थे···वह सवेरे ही अड्डे पर चला जाता और शाम को वहां से लौटता। आठवें दिन जब विनोद बस से एक जैण्टलमैन का सामान उतार कर रिक्शा में रख रहा था कि अचानक उसकी दृष्टि बस की सीट पर रखे हुए अखबार पर पड़ गई—सामने खुले हुए पन्ने पर एक बच्चे की तस्वीर देखकर वह चौंक पड़ा। यह उसी बच्चे के खो जाने का विज्ञापन था···लिखा था, 'जो व्यक्ति इस बच्चे को सुरक्षा से निम्न लिखित पते पर पहुंचा देगा उसे आने-जाने का किराया और एक हजार रुपये कैश इनाम के रूप में दिए जाएंगे—विनोद ने विज्ञापन में दिया पता भली-भांति मन में बिठा लिया। सामान को रिक्शा में रखवाकर वह बच्चे को उठाकर सीधा स्टेशन पर पहुंच गया—उसने उसी स्टेशन का टिकट खरीदा और दोपहर तक विज्ञापन में दिए ऐड्रेस पर पहुंच गया।

यह एक विशाल सुन्दर कोठी थी—बच्चा शायद मकान को पहचान गया था इसलिए कि मम्मी-मम्मी पुकारता हुआ रोने लगा था—विनोद ने उसे और भी कस कर छाती से चिपटा लिया—उसे अब अनुभव हो रहा था कि बस थोड़ी देर बाद यह बालक उससे छूट जाएगा—आठ दिन तक यही बालक उसके बेसहारा जीवन का सहारा सा बना रहा—उसे काम करने की प्रेरणा देता रहा—वह इस बच्चे के प्यार में अपना घर-बार और वह अप्रिय घटना जिसके कारण वह भागकर निकल खड़ा हुआ था,—सब भूल गया था—अब इस बच्चे से अलग होने के विचार से वह दुखी हो रहा था।

बच्चे के रोने की आवाज सुनकर एक नौकर अन्दर से भागता हुआ बाहर निकला—एक महिला भी उसके पीछे थी—महिला ने बच्चे को देखा और झपटकर विनोद की गोद से लेकर उसे प्यार करती हुई बोली—

'मेरा बच्चा—मेरा लाल—तू कहाँ खो गया था—' वह बच्चे को छाती से लगाकर उसका मुंह चूमती हुई रोने लगी।

विनोद की आँखें भी भर आईं—उससे यह दृश्य देखा नहीं गया—उसने एक ठंडी सांस ली और जाने के लिया मुड़ा ही था कि झट उस महिला ने पुकारा—

'अरे—सुनिए तो—।'

विनोद ठहर गया।

'इन्हें ड्राइंगरूम में ले चलो।' महिला नौकर को आदेश देकर बच्चे को गोद में लिए अन्दर चली गई।

विनोद को नौकर ने ड्राइंगरूम में ले जाकर सोफे पर बिठा दिया और स्वयं बाहर चला गया। विनोद ने देखा बहुत बढ़िया सजा हुआ ड्राइंगरूम था, फर्नीचर, कालीन

और बहुमूल्य सजावट की चीजें बता रही थीं कि किसी धनी व्यक्ति की कोठी है—थोड़ी देर बाद वही महिला बच्चे को छाती से लगाए कमरे में आई और हाथ में थमा हुआ चैक विनोद की ओर बढ़ाते हुए बोली—

'यह आपका इनाम—इसे आप छोड़े ही जा रहे थे।'

'धन्यवाद—'विनोद ने चैक न लेते हुए कहा, 'मेरा इनाम यही है कि मुझे एक बिछड़े हुए मासूम बच्चे को उसकी मां से मिलाने का असीम हर्ष प्राप्त हुआ है—यह चेक लेकर मैं उस हर्ष की अनुभूति को खोना नहीं चाहता।'

महिला ने आश्चर्य से विनोद की ओर देखा—विनोद क्षण भर चुप रहा—फिर बड़े धीरे से बोला—

'हां···एक विनय करूंगा कि इतनी आज्ञा मिल जाए जो कभी-कभार इस बच्चे को देख जाया करूं।'

'कभी-कभी क्यों ? आप रोज आ सकते हैं···लेकिन आप रहते कहां हैं ? क्या करते हैं ?'

'जहां स्थान मिल जाता है रह लेता हूं···और जो भी काम मिले कर लेता हूं।'

'मैं समझी नहीं···' महिला ने आश्चर्य से पूछा।

'आप समझ भी नहीं सकेंगी···अब मुझे आज्ञा दीजिए—।'

'नहीं···इस प्रकार मैं आपको जाने न दूंगी···आपने मेरे बच्चे को मुझसे मिलाकर मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया है।'

'और आप इस उपकार का बदला चुकाना चाहती हैं।' विनोद ने मुस्कराकर कहा।

'उपकार का बदला तो कभी कोई चुका नहीं सकता—हां, इन्सान को चाहिए कि बुरा समय पड़ने पर उस व्यक्ति की सहायता जरूर करे जिसने उससे भलाई की है···मुझे ऐसे लगता है कि आप कुछ बेचैन और चिंतित हैं—।' महिला ने बड़ी विनम्रता से कहा।

'घर छोड़कर इन्सान को चिंता तो होती ही है···अगर मैंने आपके बच्चे को आप तक न पहुंचाया होता तो इतनी प्रार्थना अवश्य करता कि मुझे कोई छोटा-मोटा काम दिलवा दें···लेकिन अब मैं यह भी नहीं कहूंगा···इसलिए कि यह भी उपकार के समान होगा।'

'लेकिन एक दूसरे की सहायता लेना देना तो मानवीय क्रिया है···और यह निन्दनीय नहीं—फिर मुझे स्वयं आप जैसे शरीफ और ईमानदार व्यक्ति की जरूरत भी है···।'

'मैं समझा नहीं···।'

'मैं समझा दूंगी···पहले आप यह बताइए कि आप कहां तक पढ़े हुए हैं।'

'एफ० ए० तक···।'

'खूब···तब आप ठीक सम्भाल लेंगे।'

'किस काम को ?'

महिला एक ठंडी सांस लेकर बोली, 'हमारा बहुत बड़ा कारोबार है जिसे सम्भालने के लिए किसी मेहनती और ईमानदार व्यक्ति की जरूरत है···मैं अपने वर्तमान कार्यकर्त्ता से सन्तुष्ट नहीं हूं···उसके ऊपर एक ऐसा आदमी रखना चाहती हूं जो कारोबार की कड़ी देखभाल कर सके···।'

'क्या आपके···।' विनोद ने वाक्य अधूरा छोड़ दिया।

'अब वह इस दुनिया में नहीं हैं—।' महिला ने ठंडी सांस लेकर कहा।

'जी—?'

'इस बच्चे के डैडी पहले देखभाल करते थे—उन्हें पिछले वर्ष टी० बी० की शिकायत हो गई थी···इलाज कराते रहे लेकिन आराम नहीं हुआ 'पिछले दिनों हम उन्हें एक सैनीटोरियम में भरती करने ले जा रहे थे कि रास्ते में ही अचानक उनका देहांत हो गया···तभी इस बच्चे को नौकर के साथ दूसरे डिब्बे में बिठा दिया था···हम लोग इस घटना से शोक में और घबराहट में थे और जब गाड़ी से उनकी लाश लेकर उतरे तो सोए हुए राजू को नौकर उठाना भूल गया—और वह डिब्बे में ही रह गया···मैं तो बेहोश हो गई थी इसलिए नौकर भी घबरा गया था···और राजू इतने दिन मुझसे बिछुड़ा रहा···।' यह कहकर महिला आंसू पोंछने लगी।

महिला की बात सुनकर विनोद को बहुत दुख हुआ···वह कुछ देर सोचता रहा और फिर बोला—

'आपके हालात ऐसे हैं कि मैं आपको बात से इंकार नहीं कर सकता।''

''धन्यवाद···'' महिला ने कहा, ''आज से आप यहीं रहेंगे···एक कमरा आपको अलग इसी कोठी में मिल जाएगा।''

दूसरे दिन महिला ने विनोद को कारोबार के बारे में सब कुछ भली-भांति समझा दिया···तनख्वाह के बारे में न विनोद ने कुछ पूछना उचित समझा और न महिला ही ने बात की। उसी दिन महिला ने विनोद को अपने साथ बाजार ले जाकर कई अच्छे सूट और जरूरत का दूसरा सामान खरीद दिया। ···वह चाहती थी कि विनोद टिप-टाप और स्मार्ट रहे···तभी वह दूसरे काम करने वालों पर अपना प्रभाव डाल सकेगा।

महिला का नाम था कमला···दुबली-पतली···लगभग तीस-पैंतीस वर्ष की आयु होगी···विनोद उनका बहुत आदर करता था और वह भी उसे घर ही के सदस्य के समान समझती थीं।

विनोद को यहाँ काम करते हुए दो वर्ष बीत गए···इस बीच में कई बार उसे घर की याद आई लेकिन उसने झट किसी काम में जुटकर उस याद को मस्तिष्क से झटक दिया···राजू उसे 'अंकल' पुकारने लगा था और विनोद के लिए दीवाना था···कमला इन दोनों के प्यार से बहुत खुश थी···।

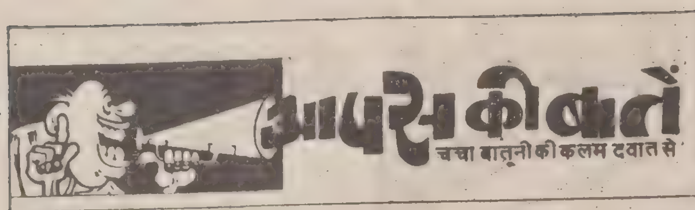
समय बीतता रहा···।

कमला एक बार बीमार पड़ी और कमजोर होती चली गई···विनोद ने उन्हें डाक्टर को दिखाने के लिए कहा लेकिन वह नहीं मानीं···घर का ही थोड़ा-बहुत इलाज करती रहीं···।

एक दिन विनोद दफ्तर से लौटा तो राजू उसे बरामदे ही में खड़ा मिला···विनोद के आते ही वह उससे लिपट गया और बोला—

शेष पृष्ठ 32 पर





अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

प्रो० जहांगीर—रांची : चाचा जी, जब ग्रापका मूड खराब होता है तो ग्राप क्या काम करते हैं ?

उ० : इस बात को याद करते हैं कि पिछली बार जब मूड खराब हुग्रा था तो हमने घर की दीवार ग्रौर ग्रपने सर का 'भरत मिलाप' कर दिया था। उससे दीवार पर तो कोई निशान नहीं बना। पर सर का निशान ग्रब तक बाकी है।

अशफाक—जयपुर : ऐसी कौन सी चीज है, जो ग्रच्छी तो है, पर जिसका लेने वाला कोई नहीं।

उ० : हमें तो ऐसी एक ही 'नोज' का पता है। एक बार जब हम ग्रपने गांव गये तो वहां भालू ग्रा गया। सारे गांव में भगदड़ मच गई। हमारी श्रीमतीजी ने कहा, 'मुझे भालू से बहुत डर लग रहा है। कहीं इधर ही न ग्रा जाए। चलो, कहीं भाग चलें।' हमने कहा, 'तुम डर क्यों रही हो भाग्यवान, भालू क्या क्रेन लेकर ग्राया होगा जो तुम्हें उठाकर ले जाएगा।'

बाबूमियां गिलानी—पटना : कुछ लोग ग्रसफल होने पर ग्रात्म हत्या क्यों कर लेते हैं ?

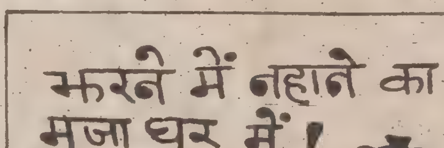
उ० : क्योंकि वे सफलता ग्रौर ग्रसफलता ग्रसली मतलब नहीं समझ पाते। एक बार हमें बहुत दिन बाद हमें एक पुराना मित्र मिला। हमने उससे पूछा, 'शर्मा जी, वह जो वकील साहब थे। मिस्टर वर्मा, वह जो तुम्हारे किरायेदार थे, उनका क्या बना ?' उन्होंने उत्तर दिया, 'उसी मकान में रहते हैं, जहां पहले रहते थे, पिछले साल मेरे मुकदमों में वही मेरे वकील थे।' हमने पूछा, 'क्या उन्हें सफलता मिली ?' उन्होंने उत्तर दिया, 'जी हां, बहुत सफलता मिली, पहले वह मेरे किरायेदार थे, ग्रब मैं उनका किराएदार हूं !'

श्यामलाल के० राय—कोटमनीवती : पापा जी, हमारे देश के डाक्टर विदेशों में जाकर क्यों बस जाते हैं ? क्या यहां मरीजों की कमी है ?

उ० : सवाल मरीजों की संख्या का नहीं है, वहां की चमक दमक का है, इस बात पर कि बेटा विदेश गया है, बाप की छाती फूल जाती है। पर इसकी हकीकत क्या है, यह हमारे पड़ौसी मक्खनलाल की बात से समझिये। पिछले दिनों हमने उनसे पूछा, 'मक्खनलाल भाई तुम्हारा बेटा ग्रमरीका चला गया। क्या वहां उसकी कोई कीमत बढ़ी ?' उन्होंने उत्तर दिया, 'मैं तो समझता हूं बहुत बढ़ गई। दस दिन पहले सरकार की ग्रोर से वहां के समाचार पत्रों में एक घोषणा छपी थी, छुट्टनलाल का पता देने वालों को दस हजार डालर दिया जाएगा।

गिरधरलाल रंगा—बीकानेर : ग्राप फिल्म देखने जाते हैं तो क्या चाची को साथ ले जाते हैं ?

उ० : पहले ले जाते थे, पर ग्रब नहीं ले जाते। क्योंकि ले जायें तो लोग फिल्म कम हमारी श्रीमतीजी को ग्रधिक देखते हैं ग्रौर जालिम मनोरंजन टैक्स की फूटी कौड़ी तक नहीं देते।



बीलाल अहमद कादरी—बीकानेर : ग्रब मेरी रचनायें प्रकाशित नहीं करते। क्या कारण है ?

उ० : हमारे पास रचनायें बहुत ग्राती हैं हैं ग्रौर दीवाना में जगह कम होती है। दीवाना प्रेमियों के पास इतना बड़ा सागर है कि हम उसे ग्रपनी गागर में नहीं समा पाते।

नारायन शर्मा, सोव—नाहरकटिया : चाचाजी, वह कौन सी चीज है जो जलती है, पर रोशनी नहीं देती ?

उ० : हमारे दुश्मन, जो हमसे दिन रात जलते हैं।

रविन्द्र शर्मा—दार्जिलिंग : चाचाजी, चाचीजी को क्या कहकर सम्बोधित क हैं ?

उ० : मन ही मन में पहले कहते हैं, 'न फिर ऊंची स्वर में बोलते हैं, 'रानी'

किशोर नारंग, प्रेमी—इन्दौर : ग्रादमी सबसे बड़ी पूंजी क्या है ?

उ० : उसकी नजर जो दूसरे की जेब में पूंजी पर लगी रहती है।

भंवरलाल आचार्य, राजस्थानी—कलकत्ता मैं दीवाना के लिए चुटकुले भेजूं तो ग्र स्वीकार करेंगे ?

उ० : ग्रवश्य, यदि ग्राप नये-नये ग्रौर म दार चुटकले भेजें।

जोगिन्द्रपाल 'पम्मां'—लुधियाना : तीन महीने पहले ग्रपनी फोटो भेजी थ क्या कारण है कि ग्रब तक प्रकाशित न हुई !

उ० : हमारे पास ग्राने वाली फोटो संख्या ग्रधिक ग्रौर फैंडस क्लब जगह छो पर चिन्ता न कीजिये हमारा दिल छो नहीं है ग्रापकी फोटो का नम्बर जल्दी ग्राने वाला है।

अशोक जोहर 'गगन'—देहरादून : ग्र जी, ग्राप ग्रपना खाली समय किस प्रक बरबाद करते हैं ?

ऊ : फैशन की ग्रौर फिल्म की नई-नई पत्रि कायें देखकर पर ग्राप उसका गलत मतल नहीं समझें। जैसे एक बार एक जेबकत फैशन के नये-नये मैगजीन देख रहा था हमने उससे पूछा, 'क्यों भई फैशन के मैगजीन देखने का इतना शौक क्यों है तुम्हें ? उस उत्तर दिया, ताकि यह पता लगता रहे ग्राजकल के कपड़ों में जेब कहां लगाने रिवाज है।'

रामअवतार त्यागी—लखनऊ : जैसा ग्रापकी बातों से जाहिर है, चाची ग्राप इतनी ही बुरी लगती है, तो ग्राप उन्हें दे कर ग्रांखें बन्द कर लेने होंगे ?

उ० : कई बार ग्रच्छी चीज के लिए हमने लोगों को ग्रांखें बन्द करते देखा एक बार हमारे पड़ौसी का लड़का एक रें वाले से ग्रांखें मीचकर गोल गप्पे खा र था। हमने पूछा, 'तुम ग्रांखें मीचकर पा फुले क्यों खा रहे हो पप्पू ?' उसने उ दिया, 'चाचाजी, मेरी मम्मी ने मुझसे क लेती है कि ग्राईन्दा में इनकी ग्रोर देखू भी नहीं।

ग्रापस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२



सिलबिल-पिलपिल का
देश बचाओ अभियान
हमारे सिर पर स्काईलैब गिरने वाला है, तेल की कीमतें और बढ़ गयी हैं, पाकिस्तान एटम बम बना रहा है, पुलिस वाले हड़ताल पर हैं। सारे देश में अशांति है पार्टियां टूट रही हैं। कानून और व्यवस्था भंग हो गयी है, रिश्वतखोरी और भाई भतीजावाद नंगा नाच-नाच रहे हैं और तुम दीवाना पढ़ रहे हो ?
सही बात है
दुनिया विनाश के कगार पर खड़ी है। ऐसा लगता है देश के टुकड़े-टुकड़े होने वाले हैं। कहीं कोई आशा की किरण नजर नहीं आती। ऐसे संकट के समय भी नेता लोग आपसी मार पीट और बंदर बांट में लगे हैं।
अगर जल्दी ही कुछ किया नहीं गया तो मानव जाति नष्ट हो जायेगी। हमारा भारत वर्ष तबाह हो जायेगा। ऐसे संकट के समय हमें चुप नहीं बैठना चाहिये। हमें ही कुछ करना होगा और किसी को कुछ भी फिकर नहीं है।
आखिरकार जब भी मानव जाति पर विपत्ति आती है तो हमीं दोनों को खड़ा होना पड़ता है। मोरारजी अपने कमरे में बैठे नशाबन्दी की अलग ढफली बजा रहे हैं। जनसंघियों के सामने एक ही लक्ष्य है गोहत्या बन्द कराना। बी. एल. डी वालों के पास राजनारायण में फूंक भरने के सिवा और कोई काम नहीं है। इन्दिरा गांधी को अपनी व संजय गांधी के सिवा किसी और बात की परवाह नहीं है। चरणसिंह बैठे अपने बाल नोचते रहते हैं। खैर, कोई बात नहीं। तुम मत घबराना। हम कोई न कोई इस समस्या का हल निकाल ही लेंगे याड़ी।

क्यों और कैसे

प्र० : आत्मिक या अतिभौतिक घटनायें क्या होती हैं ?

उ० : कुछ घटनायें जो मनुष्यों पर घटित होती हैं या मनुष्य करते हैं गैर-मामूली होती है परन्तु इसका अर्थ अतिभौतिक नहीं है इसका तात्पर्य है कि विज्ञान ऐसी घटनाओं को नहीं मानता। इन्हें आत्मिक या अति-भौतिक घटनायें कहते हैं।

ये घटनायें कई प्रकार की होती हैं। बहुत से व्यक्ति ऐसी घटनाओं का अध्ययन करते है तथा इन पर पूरा विश्वास करते हैं इसके विपरीत दूसरे लोग इन घटनाओं को बिल्कुल भी नहीं मानते। आइये ऐसी कुछ घटनाओं का उल्लेख करते हैं जिन्हें चमत्कार या अद्भुत घटनायें कहते हैं।

एक प्रकार की ऐसी घटनाओं में अजीब अजीब आवाजें आती हैं, मेज कुर्सियाँ हवा में उड़ने लगती हैं तथा प्लेटें इत्यादि टूटने लगती हैं और इन घरों में रहने वाले इन सबका कोई कारण नहीं बता पाते। परन्तु ऐसी घटनाओं के घटने के स्थान पर किसी विशेष व्यक्ति की उपस्थिति अनिवार्य सी ही है ऐसी घटनाओं को भूतई घटनायें कहते हैं।

परन्तु अधिक रोचक इनमें दिमागी घट-नायें होती हैं। इनमें कोई-कोई विशेष व्यक्ति कुछ ऐसी घटनाओं को पहले से ही जान जाते हैं जिनके जानने का कोई भी साधन इन व्यक्तियों के पास नहीं होता। उदाहरण के लिए किसी विशेष व्यक्ति के विचारों को जान लेना या किसी बहुत दूर घटी घटना की जानकारी होना जिससे उनका कोई सम्बन्ध न हो। ऐसे गैर मामूली तरीके से दूसरे व्यक्ति के विचारों को जान लेने को 'टैलीपैथी' तथा दूर हुई घटनाओं की जानकारी को अतिन्द्रिय दृष्टि कहते हैं।

टैलीपैथी का प्रदर्शन करने तथा प्रमा-णित करने के लिए बहुत लोगों ने काफी खोज की है परन्तु वैज्ञानिकों के अनुसार ये परिश्रम ठीक प्रकार से नहीं किये गये हैं। इसके अतिरिक्त एक और अतिभौतिक चमत्कार है जिसे 'पूर्वज्ञान' या 'पूर्वदर्शन' कहते हैं। इससे सम्बन्धित व्यक्ति किसी घटना के घटने के पहले ही उनके बारे में जान लेता है तथा इस पूर्वज्ञान में विश्वास न करने वाले कहते हैं कि ऐसे पूर्वज्ञान वाले व्यक्ति सट्टे बाजार में अमीर क्यों नहीं हो जाते या फिर अपराधों को होने से क्यों नहीं रोक लेते। फिर भी इस पूर्वज्ञान के अति-भौतिक चमत्कार के बारे में दोनों ओर से ही दलीलें उठती हैं, कुछ लोग इस पर पूरा विश्वास करते हैं तथा वैज्ञानिक लोग कहते हैं कि ये सब हो नहीं सकता।

इसी सन्दर्भ में अमरीका में न्यूजरसी में रहने वाली श्रीमती डोरथी एलाईसन का उल्लेख गलत न होगा। ये वो स्त्री हैं जो कि आज भी अपनी इस आत्मिक दृष्टि की देन से बहुत से व्यक्तियों तथा पुलिस की मदद कर रही हैं। ऐसी ही एक घटना में सारी खोज से निराश होकर मि० लिटिन ने ८ नवम्बर १९७५ को अपनी १८ वर्षीय खोई हुई लड़की का पता पूछने श्रीमती एलाईसन के पास गये। जब श्रीमती एलाई-सन को उनके आने का उद्देश्य पता चला तो उन्होंने कुछ भी नहीं कहा परन्तु ऐसे बोलना आरम्भ किया जैसे कोई टैलीविजन पर अलग-अलग तस्वीरें देख रही हो। उन्होंने बताया कि तुम्हारी लड़की सुरक्षित है, वो एक गंदे से लाल दरवाजे के घर में रह रही है, इस घर का नम्बर १०६, १८६ या १६८ है। जिस व्यक्ति के साथ वो लड़की है उसके नाम में दो आर हैं जैसे Harry। इस घर का पता २१ जनवरी तक लग जायेगा तथा तुम अपनी लड़की से २१ या २२ जनवरी को अवश्य मिल जाओगे। एक बात और है कि तुम नाना बनने वाले हो।

श्री लिटिल इसके बाद भी प्राइवेट जासूसों द्वारा लड़की की खोज करवाते रहे परन्तु कई हफ्तों की लगातार खोज के बाद भी जासूस श्री चार्लस डिलाहन्थी कुछ भी पता न लगा सके। फिर १९७६ की जनवरी के आरम्भ में उन्होंने श्रीमती एलाईसन को फोन कर पूछा कि क्या वो लड़की का पता लगाने चलेगी तो उन्होंने अगले सप्ताह उनके साथ जाने का वायदा किया। कार में बैठते ही श्रीमती एलाइसन ने न्यूयार्क चलने को कहा, इस पर श्री डिलाहन्थी ने पूछा 'क्यों ?' तो उन्होंने उत्तर दिया कि वहीं तो लड़की है। मैनहटन में पहुंचकर लगभग तीन घंटे तक बिना किसी दिशा ज्ञान के वो कार को इधर-उधर मुड़वाती रही और बुकलेन में पहुंचकर कहने लगी यहां प्रेसीडेन्ट से संबधित कुछ होना चाहिए। इसके बाद दूसरी सड़क पर पहुंचकर एक पुराने टूटे-फूटे घर की ओर इशारा करके कार रुकवाई। इस समय श्री डिलाहन्थी ने अपने साथी से कहा ये स्त्री पागल है। इस घर का दरवाजा लाल से रंग का था और नम्बर १८६ था। इस घर के नीचे की मंजिल में टैक्सी बुलाने का दफ्तर था। यहां पूछताछ करने पर यहां बैठी महिला ने लड़की के वहां होने से इन्कार किया। परन्तु लड़की वहीं पलग के नीचे छुपी हुई पाई गई तथा वो गर्भवती भी थी।

इसी प्रकार कई घटनाओं में श्रीम
एलाईसन की सहायता से खोए हुए व्यक्ति
का पता लग चुका है। इस कार्य के लि
वो किसी प्रकार से कोई पैसे लेने से इन्क
करती है और इनका कहना है यदि मुझे
ईश्वरीय देन प्राप्त है तो इसे मानवता
सहायता के अतिरिक्त किसी भी प्रक
प्रयुक्त करना गलत होगा।

प्र० : क्या कुत्ते भी सपने देखते हैं

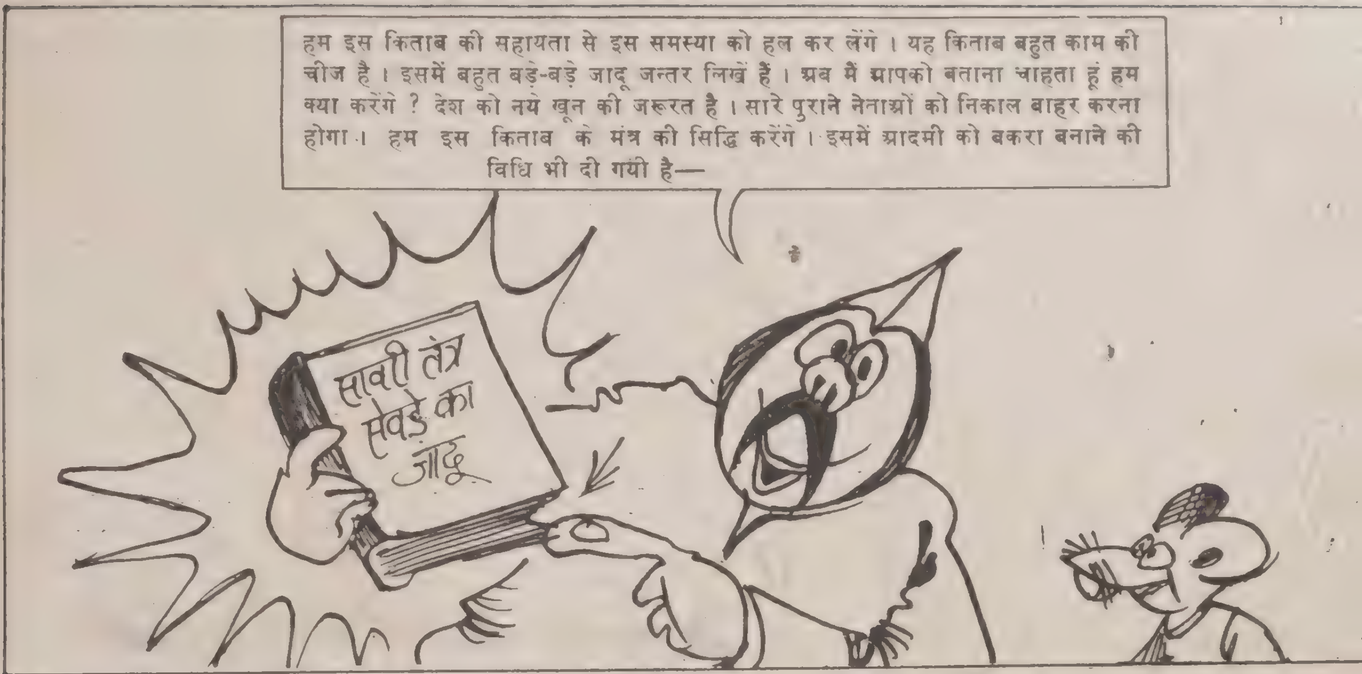
उ० : यदि आपने कुत्ता पाला हुआ
तो आपने अवश्य देखा होगा कि सोते
कभी वो धीमी-धीमी आवाज निकालत
तथा कभी पूंछ हिलाता है या अपनी
हिलाता है। कुत्ते पालने वालों का विश्व
है कि इन संकेतों को देखकर हम कह स
हैं कि कुत्ते सपने देखते हैं। परन्तु वैज्ञानि
का मत है कि कुत्ते सपने नहीं देखते। वे
पूरी तौर से नहीं कह सकते लेकिन फिर
स्पष्ट करने की कोशिश करते हैं।

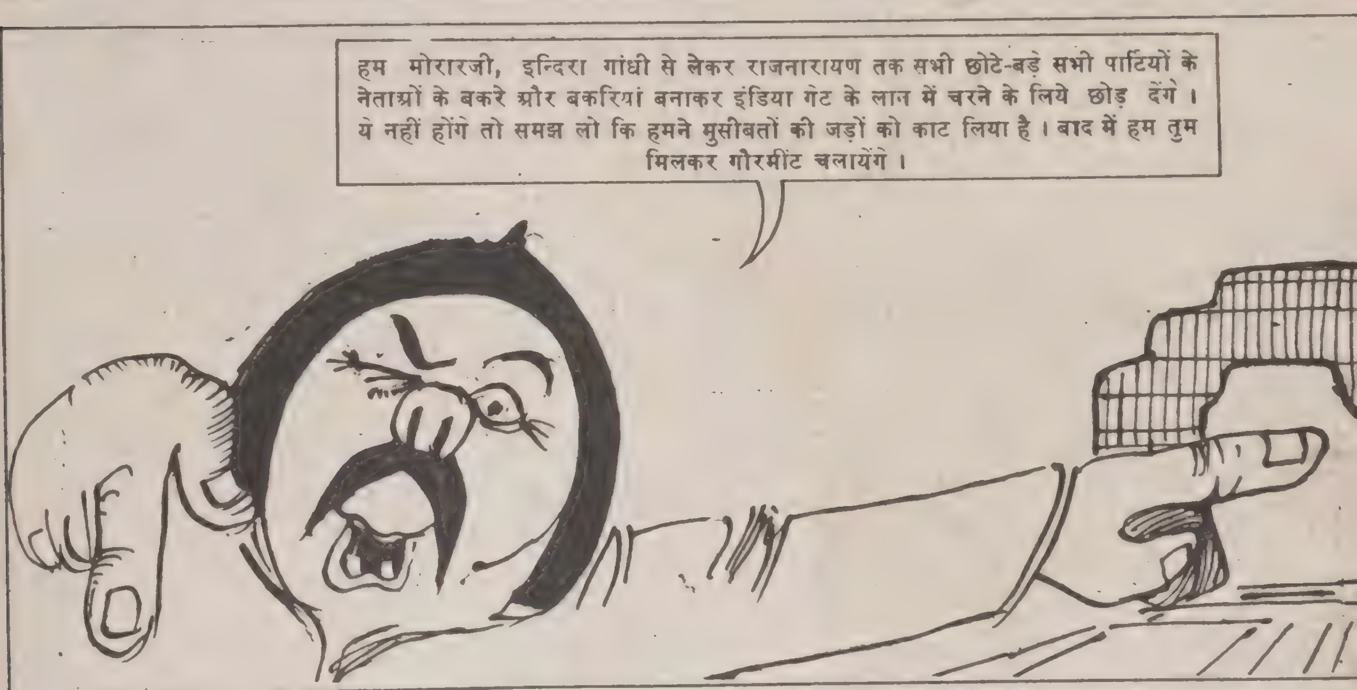
वैज्ञानिकों के मत को समझने के
हमें ये मानना पड़ेगा कि मनुष्य तथा
दोनों का ही विकास क्रमविकास द्वारा
है अर्थात् सहस्रों वर्षो के क्रमविकास
बाद ही मनुष्य अपने इस विकसित रूप
पा सका है। हालांकि मनुष्य और पशु
बातों में काफी मिलते हैं परन्तु उनके दि
की बनावट क्या ज्ञानेन्द्रियां भिन्न रू
विकसित हुई हैं और उसके परिणाम स्व
पशु अपनी ही दुनिया में रहते हैं जो
मनुष्य से भिन्न हैं, इसलिए यदि पशुओं
मस्तिष्क तथा ज्ञानेन्द्रियाँ भिन्न रूप
कार्य करते हैं तो हम उनके दिमाग के
की तुलना अपने दिमाग से नहीं कर स
और उसे एक जैसा नहीं समझ सकते।
बुद्धि, ज्ञान और व्यक्तित्व में मनुष्य
छोटा रूप नहीं है, हम पशुओं के वि
को जान नहीं सकते। इसलिए कुत्ते
सोते समय पूंछ या पैर हिलाते दे
धीमी सी आवाज निकालते देखकर ये
झना कि कुत्ता सपना देख रहा है नि
गलत है। हो सकता है ऐसे समय
कोशिका कुछ संदेश दोहरा रहे हों
कुत्ते को कोई सपना दिख न रहा हो
पशुओं के दिमाग मनुष्य के दिमाग के
बने हैं। हो सकता है इन पशुओं के
मनुष्य से मिलते हों, परन्तु इनके
भी केवल अति साधारण विचार ही हों
हैं।

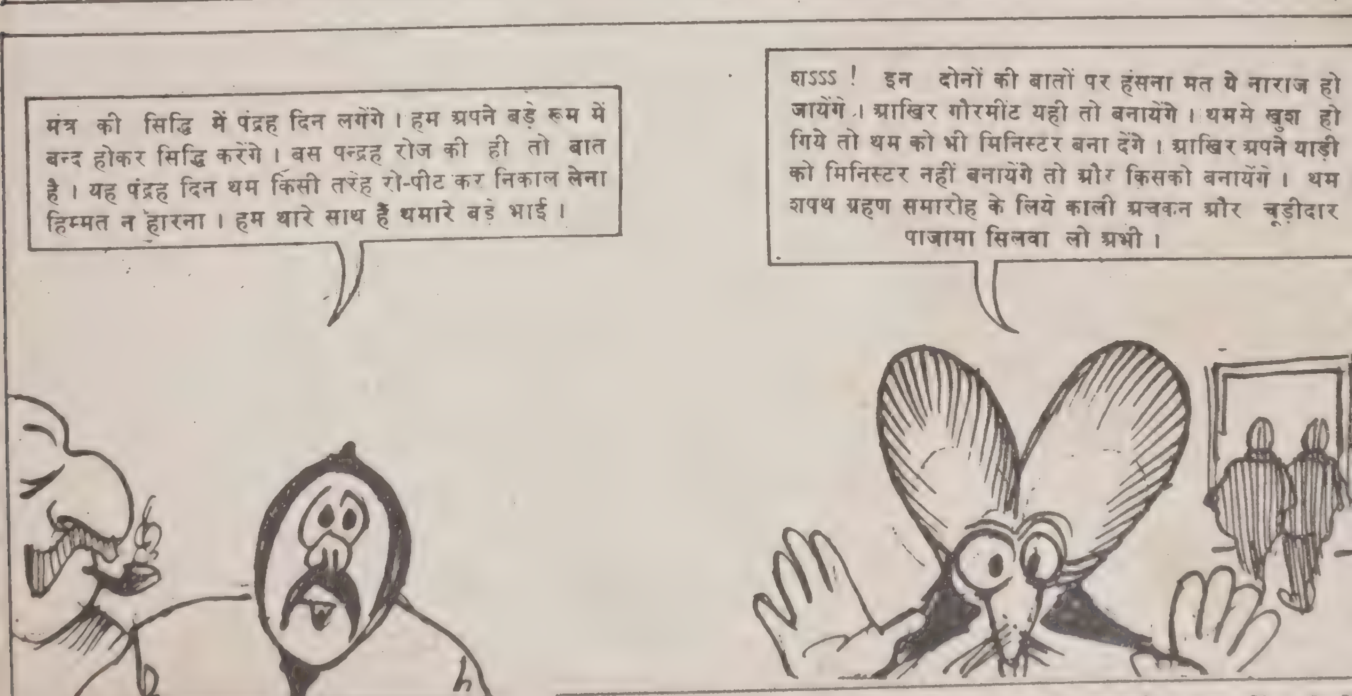
क्यों और कैसे
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२


खबरदार पिलपिल और सिलबिल कमरे में मानव जाति, देश व दुनिया को बचाने के लिये कांफ्रेंस कर रहे हैं। दीवाना आहिस्ते पढ़ना। कोई शोर या डिस्टर्बेंस न हो। मैं रायफल लेकर कमरे के बाहर पहरा देता रहूंगा। सारी दुनिया का भविष्य इन्हीं दोनों की शिखर वार्ता पर निर्भर है। सारी दुनिया की आंखें इन पर लगी।
सारी दुनिया के मन्दिर, मस्जिद व गिरिजाघरों में इनकी सफलता के लिये विशेष प्रार्थना सभायें हो रही हैं।
यह देखो, दुनिया भर से इनकी सफलता के लिये शुभकानाओं के संदेश आ रहे हैं। सभी राष्ट्रपतियों व प्रधान मंत्रियों ने केबल व टेलीग्राम भेजे हैं। आजकल दुनिया भर के कबूतर इन संदेशों को लाने में लगे हैं। हमारे पास जल्दी ही इन शुभकामनाओं के संदेशों की इतनी रद्दी इकट्ठी हो जायेगी कि इसी रद्दी को बेच कर हम इतना पैसा इकट्ठा कर लेंगे कि आठ दस रोज में ही हरियाणा में भजनलाल की सरकार को गिरा देंगे।
मरगया
बचाओ
उई मां


पीड़ा
थम डर गये ? इसमें घबराने वाली बात नहीं है । यह दर्द भरी चीख पुकार तो इस बात का सबूत है कि समस्या का हल निकलने ही वाला है । एक नया आइडिया जन्म लेने वाला है । जिस तरह बच्चे को जन्म देते समय माता प्रसव पीड़ा के दौर से गुजरती है उसी तरह यह जब नये आइडिये को जन्म देने वाले होते हैं तो उसी तरह की पीड़ा से तड़फते हैं । आखिर आइडिया कोई मामूली थोड़े ही होगा । गुड़गावें की बागड़ी भैंस के बराबर-- तो होगा ही ।
ओह, सारी दुनिया हमारी इंतजारी कर रही होगी । हम अभी एक बहुत जरूरी घोषणा करना चाहते हैं । चूहे तू जा माइक और लाऊड स्पीकर ले आ । सब लोग सांस रोककर दुनिया के भविष्य के बारे में जानने को खड़े हैं ।
थमने यह तो बताया ही नहीं कि लड़का हुआ या……
हम सब पब्लिक के सामने बतायेंगे । तू जल्दी कर । बहुत माथा पच्ची करके आखिर हमने हल खोज ही निकाला है ।
चलो दुनिया नष्ट होने से बच गयी ।
भाइयों और बहनों, देश बहुत संकट की स्थिति से गुजर रहा है । आप सब की चिन्ता को मैं अच्छी तरह समझता हूं । आप लोगों को इस संकट से निकालने को हमने बीड़ा उठाया है और हम अपना प्रण पूरा करके दिखायेंगे । हम जनता के छोटे से सेवक हैं । जनता की सेवा करना हम अपना पहला फर्ज समझते हैं । आज की समस्याओं की सारी जड़ में नेता लोग हैं । इनको बकवास करने के सिवा और कोई काम आता ही नहीं है । सबसे पहले हमें इन्हें हटाना है ।
जब मैं अंगुली हिलाकर इशारा करूं तो थम ताली बजाना ।
RADIO







पिलपिल-सिलबिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये

खेल खेल में

पुशविन्द्र रन्धावा—यमुना नगर

प्र० : क्या यह सच है कि भारत के सात खिलाड़ी 'पैकर सर्कस' में भर्ती होने जा रहे हैं ?

उ० : अब तो पैकर सर्कस में भर्ती होने का सवाल ही नहीं उठता, क्योंकि पैकर का आस्ट्रेलियाई क्रिकेट बोर्ड से समझौता हो गया है और निकट भविष्य में वर्ल्ड सीरीज क्रिकेट, क्रिकेट बोर्ड के तत्वाधान में ही होगा। पैकर को दस वर्ष का आस्ट्रेलियाई टैस्ट दिखाने का टी० वी० अधिकार प्राप्त हो गया है। इसीलिए पैकर ने इतना सब बावेला मचाया था जहां तक भारतीय खिलाड़ियों को पैकर में भर्ती करने का सवाल था वह पैकर की महज एक चाल थी। भारतीय बल्लेबाजों की बल्लेबाजी के कारण नहीं। भारत ही एक मात्र देश रह गया था जहां की टैस्ट टीम को वह तोड़ नहीं पाया था। केवल टीम को तोड़ डालने के लिए ही पैकर भारतीय क्रिकेटों को भर्ती करना चाहता था। अब आप ही सोचिए जहां विश्व के श्रेष्ठतम खिलाड़ी एकत्र हों वहां हमारे वेंगसरकर और मोहिन्दर अमरनाथ वगैरह की क्या पूछ होती। पैकर का वर्ल्ड-सीरीज चकाचौंध करने वाला खेल था। सीमित ओवरों के मैच होते थे जिसमें धुआंधार बल्लेबाजी और लिलो, थामसन राबर्टस होल्डिंग, प्राक्टर, इमरान, गार्नर, क्रॉफ्ट व लेन पास्को की तूफानी गेंदबाजी। हमारा तो यह ख्याल है कि गावस्कर तथा विश्वनाथ का भी वहां चल पाना मुश्किल होता। हमारे खिलाड़ी इस प्रकार के तेज खेल खेलने में कितने माहिर हैं यह तो विश्व प्रूडेन्शल कप में उनके प्रदर्शन से ही साफ पता लग जाता है। हमारे बल्लेबाज न्यूजीलैण्ड की साधारण गेंदबाजी के सामने ही ढेर हो गये। हमारे खिलाड़ियों को यह शुक्र मनाना चाहिए कि वे पैकर सीरीज से नहीं गये वरना वहां दूसरे खिलाड़ियों के जूते उठाने के सिवा शायद ही वह और कोई काम करने योग्य पाये जाते। सबसे शर्मनाक तो प्रूडेन्शल कप में भारत की श्रीलंका से हार है। पैकर ऐसे खिलाड़ियों का क्या करता ?

गावस्कर और डॉन ब्रडमैन एक तुलना आंकड़ों में
(यह रिकार्ड इस वर्ष के इगलैण्ड टैस्टों से पहले के हैं)

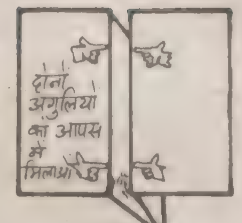
गावस्कर के टैस्ट जीवन का लेखा-जोखा

	विरुद्ध ⟶	टैस्ट	रन	औसत	३००	२००	१००	५०	१ से ४६	जीरो
१६७०-७१	वैस्टइण्डीज वैस्टइण्डीज में	४	७७४	१५४.८०	—	१	३	३	१	—
१६७१	इग्लैण्ड इग्लैण्ड में	३	१४४	२४.००	—	—	—	२	३	१
१६७२-७३	इग्लैण्ड भारत में	५	२२४	२४.८८	—	–	—	२	७	१
१६७४	इग्लैण्ड इग्लैण्ड में	३	२१७	३६.१६	—	—	१	१	३	१
१६७४-७५	वैस्टइण्डीज भारत में	२	१०८	२७.००	—	—	—	१	२	१
१६७५-७६	न्यूजीलैण्ड न्यूजीलैण्ड में	३	२६६	६६.५०	—	—	१	१	३	—
१६७५-७६	वैस्टइण्डीज वैस्टइण्डीज में	४	३६०	५५.७१	—	—	२	१	४	—
१६७६-७७	न्यूजीलैण्ड भारत में	३	२५६	४३.१६	—	—	१	१	४	—
१६७६-७७	इग्लैण्ड भारत में	५	३६४	३६.४०	—	—	१	२	६	१
१६७७-७८	आस्ट्रेलिया आस्ट्रेलिया में	५	४५०	५०.००	—	—	३	—	५	१
१६७८-७६	पाकिस्तान पाकिस्ताक में	३	४४७	४६.४०	—	—	२	२	२	—
१६७८-७६	वैस्टइण्डीज भारत में	६	७३२	६१.५०	—	१	३	१	३	१
	योग	४६	४,४०५	५५.७५	—	२	१७	१७	४३	७

ब्रोडमैन के टैस्ट जीवन का लेखा-जोखा

	विरुद्ध ⟶	टैस्ट	रन	औसत	३००	२००	१००	५०	१ से ४६	जीरो
१६२८-२६	इग्लैण्ड आस्ट्रेलिया में	४	४६८	६६.८५	—	—	२	२	४	—
१६३०	इग्लैण्ड इग्लैण्ड में	५	६७४	१३६.१४	१	२	१	—	३	—
१६३०-३१	वैस्टइण्डीज आस्ट्रेलिया में	५	४४७	७४.५०	—	१	१	—	३	१
१६३१-३२	साउथ अफ्रीका आस्ट्रेलिया में	५	८०६	२०१.५०	—	२	२	—	१	—
१६३२-३३	इग्लैण्ड आस्ट्रेलिया में	४	३६६	५६.५७	—	—	१	३	३	१
१६३४	इग्लैण्ड इग्लैण्ड में	५	७५८	६४.७५	१	१	—	१	५	—
१६३६-३७	इग्लैण्ड आस्ट्रेलिया में	५	८१०	६०.००	—	२	१	१	३	२
१६३८	इग्लैण्ड इग्लैण्ड में	४	४३४	१०८.५०	—	—	३	१	२	—
१६४६-४७	इग्लैण्ड आस्ट्रेलिया में	५	६८०	६७.१४	—	१	१	३	२	१
१६४७-४८	भारत आस्ट्रेलिया में	५	७१५	१७८.७५	—	१	३	१	१	—
१६४८	इग्लैण्ड इग्लैण्ड में	५	५०८	७२.५७	—	—	२	१	४	२
	योग	५२	६,६६६	६६.६४	२	१०	१७	१३	३१	७

दीवाने कार्ड को मोड़कर देखिये



दोनों अंगुलियों को आपस में मिलाइये

अपने चारों ओर नजर डालिए। प्रकृति की छटा बिखरी है। एक ओर नीला समुद्र है और दूसरी ओर ऊँचे-ऊँचे पहाड़। बर्फ से ढकी चोटियां रंग-बिरंगे बादलों को छूते हुये घने जंगल, सनसन कर बहती ठंडी हवा, इंद्र धनुष का मनोहारी रंग..........



कल कल करती नदियां, फूलों भरी वादियां और फेन उगलते झरने। कहीं भी पहुंच जाइये और भरपूर आनन्द उठाइए। इन नजारों में रंग किसने भरे? क्या भगवान ने? या प्रकृति ने खुद? इन दो प्रसिद्ध मानन्यताओं के अलावा तीसरा भी है! वास्तव में यह रहस्यमय तीसरा कलाकार ही इन कुदरती छटाओं को रंगीन बनाकर हमारे सामने रखता है। कौन है वह तीसरा अनोखा कलकार? यह जानने के लिए पृष्ठ मोड़िए—

चना कुरमुरा

● एक विदेशी नेता जापान गया। वहाँ उसके सम्मान में भोज दिया गया। भोज में स्थानीय नेता ने उसे जाम पेश किया और बोला, 'यह हमारे देश की बनी व्हिस्की है इसे पीकर देखिए।'

आँखें बन्द कर विदेशी नेता ने घूंट भरा और गले से नीचे उतरने पर आँखें खोलीं तो उसे दीवारें हिलती नजर आयीं। टेबलें और कुर्सीयां चलती-सी लगीं। ऐसा महसूस हुआ जैसे पैरों के नीचे फर्श हिल रहा हो! उसने झुककर स्थानीय नेता से कहा, 'साहब, यह शराब तो इतनी तेज है ऐसा लगता है जैसे भूचाल आ गया हो।'

स्थानीय नेता बोला, 'शराब तेज नहीं है सचमुच ही भूचाल आ गया है।'

● एक साहब कुत्ते के साथ टहल रहे थे। उन्होंने हाथ में कुत्ते की जंजीर पकड़ रखी थी। एक अजनबी बड़ी गौर से उन्हें देखने लगा उन साहब को बुरा लगा और बोले, 'क्यों हजरत आपने अब तक कभी किसी आदमी को कुत्ते के साथ टहलते नहीं देखा है?'

अजनबी, 'देखा है! मैं तो गौर से देख यही जानने की कोशिश कर रहा था कि जंजीर के कौन से सिरे वाला कुत्ता है और कौन से वाला इंसान।'

● चतुरलाल जी के यहां मेहमान ठहरा था। मार्केट में तीसरे दिन चतुर लाल के पड़ोसी को वह मेहमान दिख गये तो पास जाकर बोले, 'माफ कीजिये आप चतुरलाल जी के मेहमान ही हैं न?'

मेहमान बोले, 'अजी मेहमान कैसा! रोज चतुरलाल के बच्चे आठ दस रुपये की मिठाई मुझसे खा जाते हैं।'

● एक मित्र, 'तुम इलैक्ट्रिशिन क्य[ों] बने।'

दूसरा, 'बेकारी में बहुत तंगी रहत[ी] थी! घर की हालत ने मेरे दिल के ता[र] को छू लिया।'

जूडो कैराटे कैसे सीखें?

इनस्टेप की सामने वाली जगह को मजबूत बनाने के लिए अभ्यास करें। इनस्टेप का यह मजबूत भाग आपके उस समय काम आयेगा, जब शत्रु से आपकी गुत्थम-गुत्था मुठभेड़ हो रही हो और शत्रु आप पर भारी पड़ रहा हो। इनस्टेप के इस भाग का प्रहार शत्रु को पिंडली पर अथवा जांघों के बीच में सीधा प्रहार भी किया जा सकता है।

आप अपने पैरों की उंगलियों के नीचे की गद्दी को कठोर बना सकते हैं। इस अभ्यास में यह खास ध्यान रखें कि खम्भे पर पैर की गद्दी का प्रहार करते समय उंगलियों को ऊपर की ओर मोड़ लें। पैर को ऊपर उठाइए और थोड़ा घुटना मोड़कर पहले पीछे की ओर झुलाते हुए ले जाइए और फिर खम्भे पर प्रहार कीजिए। तलवे की इस गद्दी का प्रहार आप शत्रु के पेट पर अथवा पिंडली पर कर सकते हैं।

पैर के तलवे को मजबूत बनाने का अभ्यास कीजिए। पीछे की ओर पैर उठाकर इस तरह के प्रहार करने को 'दुलत्ती मारना' या 'घोड़े की लात' भी कहा जाता इस अभ्यास के खम्भे की ओर आपकी पीठ होनी चाहिए। अब पैर को उठाकर पहले झुलाते हुए आगे की ओर से जाइए और फिर झुलाते हुए तेजी से ले जाते हुए खम्भे पर प्रहार कीजिए। इस तरह के प्रहार की आपको तब जरूरत पड़ेगी जब दो दुश्मन साथ आप पर आक्रमण कर रहे हों। उस स्थिति में एक को आप हाथों से संभालिए। तथा पीछे से आक्रमण कर रहे दुश्मन को इस दुलत्ती छाप प्रहार से बेदम कर दीजिए यह प्रहार दुश्मन की छाती अथवा पेट पर या जांघ पर अथवा घुटने की कटोरी पर भी किया जा सकता है।



ऊपर दिए गए पैरों के जितने भी अभ्यास दिए गए हैं। उनका अभ्यास बारी-बारी से पन्द्रह-पन्द्रह, बीस-बीस बार कीजिए अभ्यास दोनों पैरों का सामान रूप से कीजिए।

आपका तीसरा मुख्य हथियार—सिर

कैराटे खेल में हमारा तीसरा मुख्य हथियार सिर है। लेकिन सिर का उपयोग प्रहार के लिए जितना हो सके, कम ही करना चाहिए क्योंकि यह हानिकारक है। लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं है कि सिर का उपयोग किया ही न जाये। जब शत्रु बिल्कुल पास आ जाये और आप किसी कारणवश हाथ-पैर चलाने से विवश हो जायें, ऐसी स्थिति में सिर का प्रहार रामबाण सिद्ध हो सकता है। हमारे सिर का वजन काफी ज्यादा होने से इसका प्रहार भी शक्तिशाली होता है। खम्भे पर सिर का प्रहार कर सिर के आगे व पीछे के हिस्से को भी मजबूत कर लेना चाहिए।

सिर के सामने का प्रहार

अगर शत्रु सामने से आकर आपके दोनों हाथों को पकड़ लेता है तो उसकी पकड़ से छुटकारा पाने के लिए पहले सिर को पीछे की ओर ले जाइये। और फिर मांस-पेशियों को कड़ा करके सिर को आगे लाते हुए झटके से शत्रु के नाक की हड्डी पर अथवा मुंह पर पूरी ताकत से प्रहार कीजिये। सिर की एक ही टक्कर में शत्रु को तारे नजर आ जायेंगे अथवा वह घबरा कर जमीन सूंघने लगेगा।

सिर से पीछे का प्रहार

यदि शत्रु पीछे से आकर आपको जकड़ ले और आप हाथ-पैर से बेबस हों तो ऐसे नाजुक समय में सिर का प्रहार ही आपको शत्रु से छुटकारा दिला सकता है। ऐसे समय सिर को थोड़ा आगे की ओर झुकाइए और फिर गर्दन की मांसपेशियों को सख्त करते हुए सिर को पीछे की ओर ले जाते हुए शत्रु के मुंह पर पूरी शक्ति से वार कर दीजिए। शत्रु आपको छोड़कर अपना मुंह पकड़ कर बैठ जायेगा।

पैर की ठोकर मारना (किक मारना)

कैराटे में जितना अधिक महत्व हाथों के आक्रमण को दिया जाता है, उतना ही अधिक महत्व पैर की ठोकर (किक) को दिया जाता है। हाथों की अपेक्षा किक का प्रहार अधिक शक्तिशाली होता है।



किक मारने का अभ्यास करने के लिए पिछले अध्याय में बल्ली पर गद्दी बांध कर पैर की ऊंची ठोकर मारने के विषय में बताया जा चुका है। उसी के अनुसार अभ्यास करते रहिए। जब तक पैर उछालने का अभ्यास न हो—किक का इस्तेमाल मत करिए, अन्यथा चोट लगने का भय रहता है।

लेकिन किक मारते समय एक पैर जमीन पर होना है तथा दूसरे पैर को ऊंचा उछाल कर किक मारी जाती है अतः अपने शरीर के सन्तुलन को बनाये रखना बहुत जरूरी होता है। इसलिए सन्तुलन को बनाये रखने के लिए किक की गति अत्यन्त तेज होनी चाहिए। जितनी तेजी से आप पैर ऊपर उछालें, उतनी ही तेजी से उसे पुनः अपने स्थान पर ले आना चाहिए।

किक मारने के कई तरीके होते हैं जैसे—हाई किक (ऊंची पैर की ठोकर), सामने की किक (फ्रन्ट किक) घुटने की किक (नी किक), साइड किक (बगल की किक) घुमावदार किक (राउन्ड किक), टखने की किक (एन्कल किक) पीछे की किक (बैक किक) तथा ऊंची उछाल किक (फ्लाइंग किक)। अब हम क्रमवार किक मारने के तरीके का वर्णन करेंगे। क्रमशः

ओंधेरे

५ रुपये जीतिये

भेड़िये का व्रत

एक बार बरसात में नदी में बाढ़ आई। एक भेड़िया बाढ़ में फंस गया। बहते-२ अचानक उसे पानी में एक पत्थर नजर आया जिसका ऊपरी भाग पानी में पूरी तरह डूबा नहीं था। भेड़िया हाथ पाँव मार कर उस पर चढ़ गया। कई दिन हो गये पानी उतरा ही नहीं। पत्थर पर चढ़े भेड़िये को भूख बहुत लगने लगी और खाने का कोई चारा नजर नहीं आया तो उसने फैसला किया कि चलो आज मंगलवार का व्रत रखता हूं।

कुछ घंटों बाद पानी में उसे एक बकरी बह कर आती दिखाई दी। उसके मुंह में पानी भर आया। उसने फैसला किया कि आज इसे खा लेता हूं, व्रत किसी और दिन रखूंगा। वह पानी में कूद पड़ा लेकिन पानी के तेज बहाव के कारण बकरी बहुत आगे वह निकली थी। वह उसके हाथ न आई। हार कर भेड़िया पत्थर पर लौट आया और कहने लगा, 'अच्छा हुआ बकरी हाथ नहीं आई वरना मेरा व्रत टूट जाता।'

सारांश— ....

अन्तिम तिथि— २८ जुलाई १९७९

दीवाना साप्ताहिक ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

तुकक्म तुक्का

मुकाबला

पुरस्कार ५ रु०

हम इस प्रतियोगिता में हर सप्ताह एक नेता को लेंगे। आपको उस नेता के नाम के अक्षरों से क्रमवार एक व्यंग्य कविता लिखनी होगी जो उसके कारनामों पर फिट बैठे। उदाहरण के तौर पर हमने राजनारायन जी पर कविता लिखी है। उसी प्रकार आप नीचे लिखे नाम पर कविता लिख भेजिए। नाम के सारे अक्षरों से क्रमवार कविता की लाइनें बनानी चाहिये।

सर्वश्रेष्ठ कविता को पुरस्कार

रायबरेली के बैसाखी नंद हैं ये,
जनता पार्टी की दाल भात में मूसरचंद हैं ये।
नाना बयान रोज अखबारों को देते हैं,
राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की खबर लेते हैं।
यह साहब जिसके पक्ष में खड़े होते हैं,
नादानी से उसी की लुटिया डुबोते हैं।

मधु लिमिए

दीवाना के कार्यालय में हल पहुंचने की अन्तिम तिथि २८ जुलाई १९७९

उत्तर केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

तुक्कम तुक्का
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

कवितायें

'तरक्की'

एक गधे को रोता देखकर
दूसरे गधे ने पूछा, पास आकर
'चुप कर क्यों रोता है
बता दोस्त, तेरे साथ क्या अन्याय होता है
क्या बताऊं ?
मेरा मालिक मुझ पर
रोज बोझ ढोता है,
—'तो फिर मेरा कहा मान
तू उसे छोड़ दे, आज से ही
अपने मालिक से
रिश्ता तोड़ ले
—'नहीं दोस्त, ऐसा तो हर्गिज नहीं करूंगा
पूरा विश्वास है तरक्की होने वाली है
मेरा मालिक, अपनी बेटी पर
जब-जब नाराज होता है—
तो कहता है—
तेरी शादी किसी गधे से करूंगा
—इसलिए यार,
मैं अभी इन्तजार करूंगा

सुनील 'कसाका' मतीला

"शेर का रौल"

सर्कस का शो हो रहा था।
दर्शक, कलाकारों के
कारनामें देख
आश्चर्य कर रहे थे।
दाद दे रहे थे,
कुछ तालियाँ बजा रहे थे।
तभी माइक पर मैनेजर आया,
आते ही चिल्लाया,
"आज हम तुम्हारे सामने
एक नया आइटम रख रहे हैं।
जो बहुत ही जोखिम का काम है।
आप, अगर उसे करके बताएंगे,
तो, आपके लिए पांच हजार रुपये इनाम है।"
सुनकर घोषणा,
दर्शक गण स्तब्ध रह गये।
सासें थम गईं,
तभी पर्दा उठा, एक लड़की आई,
आकर, होंठों पर लिपिस्टिक लगाई.
सामने पिंजड़े में से शेर आया
आकर, होंठों पर से
लिपिस्टिक चाट गया।
इसके साथ ही साथ ये आइटम समाप्त हो ग
मैनेजर मि० भोला
दुबारा माइक पर बोला,
'है कोई जो इतना साहस कर दिखाऐगा
इनाम में नगद पांच हजार रुपये पाऐगा"।
तभी एक युवा दर्शक आया, आते ही चिल्ला
'ये आइटम हम कर दिखाऐगा',
तभी मैनेजर का आदेश हुआ—"शेर को ला
ये युवक इस आइटम में काम करेगा।
तभी युवक चिल्लाया—"नहीं
शेर को नहीं, उस लड़की को बुलाओ
शेर का तो हम काम करेगा,"

महेन्द्ररिमझिम—भरत

प्रतिज्ञा

—हुकमचन्द 'पक्षी'

मैं जैसे ही बोट क्लब वाली रोड से गुजरा तो देखा दो पुलिस वाले एक व्यक्ति को बुरी तरह घसीटते हुए एक ओर को ले जा रहे हैं। उस व्यक्ति के हाथ में रंगीन पानी से भरी हुई एक छोटी शीशी थी। मैं उत्सुकता-वश वहां खड़े होकर उन्हें देखने लगा। वह व्यक्ति हतप्रभ-सा हाथ पांव फेंकते हुए कह रहा था—'आखिर मेरा कुछ अपराध भी तो बताओ।'

एक सिपाही ने उसे घसीटते हुए कहा —'तुम शराब से भरी शीशी लेकर इस सड़क से क्यों गुजर रहे थे? पता नहीं, तुम्हें इस सड़क के दोनों ओर २२० फीट तक प्राहीविशन (मद्य निषेध) एक्ट लागू है।'

'अजी-माई बाप, एक्ट तो पहले भी इस सड़क पर लगा हुआ था मगर आज से पहले तो आपने किसी को नहीं पकड़ा था।' वह व्यक्ति पूछने लगा।

'लो समझाओ इस कमअक्ल को', दूसरा सिपाही बोला—'अबे रोज नेताजी नहीं आते थे। तुझे पता नहीं आज बोट क्लब पर माननीय नेता श्री श्रद्धानन्द जी पधार रहे हैं। वे शराब के कितने बड़े विरोधी हैं। साक्षात मानवता के अवतार हैं। उन्हीं के आग्रह पर सारे प्रान्त में मद्य-निषेध लागू कर दिया गया है।

'मुझे क्षमा करें श्रीमान्, ये तो बड़ी खुशी की बात है कि अब शराब बन्द हो गयी है। मगर, कल जो शराब की नयी दुकान खुली थी, मैं तो उसी से दवा के लिए एक शीशी लाया था। श्रीमानजी, उधर तो लोग खूब पी रहे थे क्या उधर शराब बन्दी नहीं है।'

अब ऐसे सिरफिरे को कोई कैसे समझाये। पुलिस वालों ने उसकी शीशी छीनकर उसे दूर भगा दिया। मुझे जलसे, सभाओं, और जुलूसों से खास चिढ़ है मगर, जब मैंने श्रद्धानन्द जी के आगमन के बारे में सुना तो मैं बोट क्लब पर जाने का लोभ संवरण न कर सका। चारों तरफ पवित्रता ही पवित्रता। अगरबत्तियों की महक, फूलों की सजावट तथा स्थान-स्थान पर धार्मिक पुस्तकों की मुख्य पंक्तियां शामियाने में लटकी हुई थीं। नीचे दूर तक कालीन बिछा हुआ था। कसम खाने तथा प्रतिज्ञा करने के लिए बीच-बीच में गंगाजल की बोतलें रखी हुई थीं। मैं सभा में पहुँचा तो डर कुछ कम लगा क्योंकि पुलिस वाले वहां कम ही थे। मुझे पुलिस की भीड़ से बड़ा डर लगता है क्योंकि रैली-सभा चीज ही ऐसी है कि जरा देर में पुलिस का डंडा मुंह पर पड़ जाता है। रैली-जलसे आदि में उसकी सफलता तभी मानी जाती है जब लाठी चले हिंसक उपद्रव हो तथा दोनों पक्षों से नारे-बाजी हो। बस इन्हीं बातों से मैं डरता हूं। मगर इस सभा में ऐसी कोई खतरे वाली बात नहीं थीं क्योंकि यह रैली मद्यनिषेध के बारे में भी और प्रतिबन्धों तथा आदर्शों से ओत-प्रोत थी। श्रद्धानंद जी मद्यनिषेध महासभा का उदघाटन करने वाले थे, अतः मंच को अच्छी तरह सजाया गया था। प्रति वर्ष सैंकड़ों व्यक्ति शराब की भेंट चढ़कर सैंकड़ों नारियों को बेसहारा छोड़कर चल बसते हैं। इसलिए नारियों ने इस रैली में विशेष रुचि दिखाई थी और उदार हृदय से उन्होने श्रद्धानंद जी के स्वागत की तैयारियां की थीं।

आखिरकार प्रतीक्षा की घड़ियां बीतीं। झूमते हुए माननीय नेता श्री श्रद्धानंद जी ने मंच की ओर प्रवेश किया। कन्याओं ने मंच पर चढ़ने के लिए सहारा दिया। नेताजी के ललाट पर त्रिपुंड, गले में रुद्राक्ष की माला तथा कांधे पर रामनाम का दुपट्टा पड़ा हुआ था। अभूतपूर्व भीड़ को देखकर नेता जी भावातिरेक से विह्वल हो उठे। गिरने वाले थे मगर जोश से सपाट खड़े रहे। उनकी पावन दृष्टि से पांडाल धन्य हो उठा। मंगल गान हुआ, आरती गायी गई और श्रद्धानंद जी के तन पर गंगामृत छिड़का गया। बगैर कुछ बोले ही नेताजी की जय-जयकार होने लगी। सब भक्त जन उनके मुख से निकलने वाली अमृतवाणी की लालसा में थे, अतः शान्त होकर बैठ गये। नेताजी ने उद्घाटन भाषण देना शुरू किया।

'मेरे प्यारे भाइयों एवं बहिनों,

कल ही एक देवी से मेरा परिचय हुआ। वह बड़े कष्टमय दिन बिता रही है। चार बच्चे हैं जिसमें दो युवा कन्यायें हैं। पति दिन रात पीता है। माता-पिता के सही निर्देशन के अभाव में बच्चे अशिक्षित गवार रह गये। घर का गुजारा चलता नहीं है। बच्चे, पिता होते हुए भी पितृविहीन और अभाव ग्रस्त हैं। अतः सब बच्चे कुमार्ग पर चल रहे हैं। एक लड़का सड़कों पर जेब काटता है। दूसरा गलियों में आवारा घूमता है। कन्यायें तरुण हैं। मगर कंगाली से ग्रस्त हैं। वह देवी मुझे बता रही थीं कि उसके पति को क्षयरोग हो चुका है लेकिन फिर भी वह रोज पीता है। कभी नकद पीता है कभी उधार। ये तो एक घटना है। ऐसी



घटना न जाने कितनी देवियों के जीवन के साथ जुड़ी होंगी। भाइयों और बहिनों अगर मैं भारत के रत्न सत्यवादी हरिश्चन्द्र तथा शिवि की चर्चा करूं तथा सावित्री और अनुसूईया जैसी नारियों का जिक्र करूं तो तुम सबका मस्तक गर्व से उठ जायेगा। हम उन्हीं रत्नों की संतान हैं, जिन्होंने गऊओं का अमृत रूपी दूध पिया था फिर हम प्याले क्यों पी रहे हैं??

नेता जी का इतना कहना था, चारों तरफ तालियों की गड़गड़ाहट से पांडाल गूंज उठा। जय-जयकार होने लगी।

नेताजी का जोश दुगुना हो गया। भुजा फड़कने लगी। चीख-चीख कर भाषण देने लगे—'इन प्यालों का इतिहास इन प्यालों में ही समा गया है। आप रावण को ही लीजिए। सुरापान ने उसकी बुद्धि का सर्वनाश कर दिया था तभी तो सीता जैसी माता का अपहरण किया। जिस समय उसने अपने अनुज विभीषण को लात मारी थी, उस समय भी उसने पी रखी थी, वरना न वह लात मारता न विभीषण घर का भेदी लंका को ढाह देता। कुम्भकरण करोड़ों में एक था। राम लक्षमण को वह फूंक से उड़ा सकता था। हाय री तकदीर! जिस समय वह ग... ...न में था उस समय वह पिए हुए था। ...ा भालू बन्दर उसके कान और नाक म घुस गये और उसे पता भी न चल सका। कुम्भकरण नशे में चूर था। उसके ऊपर हाथियों को घुमाया गया मगर वह नहीं जागा। इसका अर्थ यह है कि पीने वाला अपने आप से बेखबर हो जाता है। शायद एक बात का आपको पता नहीं होगा। कैकेयी रानी पहले मंथरा के सिखाने से वरदान मांगने के लिए तैयार न थीं। जब मन्थरा ने देखा कि जादू ऐसे नहीं चलेगा तो उसने थोड़ी-सी व्हिस्की कैकेयी को पिला दी। बस फिर क्या था कैकयी हाये! मेरे दो वरदान! हाय मेरे दो वरदान! करने लगी और राजा दशरथ के मर जाने पर ही कैकेयी की यह व्हिस्की उतर पायी। इतना कहकर नेता जी ने स्टेज पर जोर से हाथ मारा और झूमते हुए बोले—'हमारे शास्त्रों में सुरा जैसी नर्कगामी वस्तु और किसी को नहीं माना गया है। वेदों में सब पापों का प्रायश्चित है किन्तु शराब पीने का कोई प्रायश्चित नहीं है। इसके मुंह में डालने से मनुष्य की सात पीढ़ियां पतित हो जाती हैं। इसे एक बार भगवान राम ने बालकपन में पी लिया था तो बनवास हो गया। दुर्योधन ने पिया तो कुल का नाश हो गया। एक बार इसे शिवजी महाराज ने भूल से चख लिया था। बस फिर क्या था, उन्हें कैलाश पर्वत की चोटी नीचे और जड़ ऊपर दीखने लगीं। सारी सृष्टि उन्हें उल्टी नजर आने लगी। छः महीने इलाज चला तब कहीं जाके नशा उतर पाया। शराब की बात तो बड़ी है, मैं तो चाहता हूं कि कोई व्यक्ति बीड़ी-सिगरेट भी न पिये।

तभी मैंने देखा कि दो कार्यकर्त्ता एक व्यक्ति को धक्का देकर सभा से बाहर खदेड़ रहे हैं। मैंने उधर के एक व्यक्ति से पूछा—'साहब ये कार्यकर्त्ता इस व्यक्ति को क्यों घसीट रहे हैं?

'आपने सुना नहीं अभी नेताजी ने क्या कहा था। यह व्यक्ति सिग्रेट पी-पीकर धुएं के छल्ले बना रहा था।' व्यक्ति ने बड़े उत्साह से उत्तर दिया।

श्रद्धानंद जी ने चौगुने जोश के साथ गर्जकर कहा—'मैं गंगामाई की कसम खाकर कहता हूं कि इस देश में या तो शराब ही रहेगी या मैं ही रहूंगा। कितने शर्म की बात है कि पत्नी घर में बीमार पड़ी है और पति महोदय शराब पी रहे हैं। न उन्हें बच्चों की चिन्ता है और न घर की। मेरा शराबियों को खुला चैलेन्ज है कि एक दिन उसके बीबी बच्चे घर सब नष्ट हो जाते हैं। आदमी शराब को पीता है शराब उसे पी जाती है। उनके बच्चे सही निर्देशन के अभाव में कुमार्गी हो जाती हैं। मेरा देवियों से निवेदन है कि वे भी हिम्मत से काम लें और जब भी उनका पति शराब पीकर घर आये तो उसको तीन दिन रोटी न दें और मायके जाने की धमकी दें तथा उसे प्यार से समझायें। बाकी इस मामले में हमने काफी दृढ़ रुख अपनाया है। सारे देश में मद्यनिषेध लागू कर दिया गया है। अब कोई भी व्यक्ति शराब नहीं पी सकता है। ये तो कानून की बातें हैं मगर मेरा आप लोगों को सीधा आदेश है कि कोई भी व्यक्ति शराब को न छुए। सब लोग अपने-अपने हाथों पर गंगाजल की शीशी रख लीजिए और मेरे साथ प्रतिज्ञा कीजिये।'

सब लोगों के साथ मैंने भी पवित्र मन से हाथ पर गंगाजल रख लिया। प्रतिज्ञा यूं पढ़ी जाने लगी—'हम मानव हाथ में गंगाजल लिये एक साथ कर्त्तव्य निष्ठ होकर आज से शपथ लेते हैं कि अब हम कभी शराब नहीं छुएंगे। अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य और देश की उन्नति के लिए अपनी सच्ची आत्माओं से मद्यनिषेध कानून का पालन करेंगे।

'लेकर हाथों में गंगाजल कसमें आज से लेते हैं। हम माता के सच्चे बेटे कभी सुरा नहीं पीते हैं।'

हिच! हिच! दो बार नेताजी ने की और धड़ाम से मंच पर चारों खाने चित्त गिर पड़े। ढेर सारी वमने मंच पर बह गयी। सब आश्चर्य से पूछने लगे, हाये! हमारे नेताजी को क्या हुआ?

नेताजी के सहायक सचिव धीरे से बोले- 'कुछ खास नहीं हुआ। नेताजी आज कुछ ज्यादा पी गये थे। उन्हें पता नहीं था कि आज उद्घाटन में जाना है। वरना कभी नहीं पीते। नेताजी के हाथ का गंगाजल वर्तन एक ओर पड़ा था और रामनाम का दोपट्टा वमन में सन गया था।

जनता में पहले तो खुसर-पुसर होने लगी फिर कुछ विषम तत्व जोर-जोर से नारे लगाने लगे—'नेताजी भी पीते हैं 'खामोश' नेताजी अकड़ पड़े। पड़े-पड़े ही बोले—'मुझे मेरी जनता, शराबी न समझे। मैं पीता नहीं हूं पिलायी गयी है।'

चारों तरफ जय-जयकार होने लगी और इस तरह उदघाटन समाप्त हुआ। ●

फिल्मी परिवर्तन

विश्वरमन 'निर्मल'

चूहे और चुहिया रानी में,
रोज होता था झगड़ा,
चूहे राजा लेकर डंडा, चुहिया से,
करवाते थे भंगड़ा।
चुहिया गई पड़ौसन के घर,
अब तो तुम्हीं करो कुछ बहन।
मुझ से नहीं होते हैं अब,
पतिदेव के डंडे सहन।
बोली पड़ोसन आंख नचाकर,
तुम उनमें फिल्मी परिवर्तन लाओ।
अपने शहर में लगी फिल्म है,
'जोरू का गुलाम' उन्हें दिखलाओ।
चुहिया रानी पांव पकड़कर बोली,
हे! मेरे प्रीतम आओ।
किसी तरह भी आज ही तुम,
फिल्म देखने जाओ!
पीछे से चुहिया ने सोचा,
अब तो जायेंगे हम दार्जिलिंग।
वहां कहेंगे मुझसे ही वे,
हाऊ डू यू डू डार्लिंग।
तभी जोर से चूहे ने,
दरवाजा खटकाया।
अन्दर घुसते ही हाथ में,
डंडा एक उठाया।
चुहिया जी बोली घबरा कर,
कौन सी फिल्म देखकर आये बोलो सच-सच
चूहे राजा बोले अकड़कर,
देखी है फिल्म मैंने पर देखी वीर घटोत्कच।

पृष्ठ १७ का शेष

"मैं बहुत देर से यहीं खड़ा ग्रापकी राह देख रहा हूं मम्मी की तबियत बहुत खराब है अकल—वह रो रही थीं।"

"ग्रोह···चलो देखते हैं।"

विनोद राजू को लिए कमला के कमरे में ग्रा गया···कमला सोफे पर लेटी थीं··· विनोद को ग्राते देखकर वह मुस्कराईं ग्रौर बोलीं—

"तुम ग्रा गए ?"

"हां···ग्रापकी तबियत ग्रब कैसी है ?"

"कुछ ग्रधिक बुरी नहीं···हां, सिर में थोड़ा दर्द है।"

"ग्राज ग्राप कुछ भी कहती रहें···मैं डाक्टर को बुला कर ही रहूंगा।"

कमला इंकार ही करती रहीं लेकिन विनोद ने फोन करके डाक्टर को बुला ही लिया। चैकग्रप करने के बाद डाक्टर ने विनोद को ग्रलग ले जाकर बताया कि इनका केस तो स्पष्ट एडवांस स्टेज टी० बी० का केस है···उन्हें किसी ग्रच्छे सैनिटोरियम में तुरंत ही ले जाया जाए तो ठीक रहेगा।

डाक्टर को विदा करके विनोद उदास-सा अंदर ग्राया। कमला देवी उसे देखकर मुस्करा के बोलीं

"इसी बात से मैं डरती थी···डाक्टर ने ग्राखिर तुम्हें बता ही दिया कि मुझे भी वही रोग खाए जा रहा है जो राजू के पिता जी को ले गया···मैं नहीं चाहती थी कि तुम व्यर्थ चिंता में पड़ो।"

"मैं ग्रापका इलाज कराऊंगा दीदी··· ग्राप ग्रवश्य ठीक हो जाएंगी···हम लोग कल ही नैनीताल चलेंगे।"

दूसरे ही दिन वह लोग नैनीताल चले गए···एक बहुत सुन्दर स्थान पर छोटा-सा बंगला किराए पर लिया ग्रौर यहीं कमला की देख-भाल के लिए एक ट्रेण्ड नर्स का प्रबंध कर लिया गया। परामर्श के लिए डाक्टर भी निकट ही था···यक्ष्मा से कमला देवी बहुत थक गई थीं···कुछ दिन के बाद उनका स्वास्थ्य थोड़ा ही ठीक हुग्रा था लेकिन फिर एक दिन खांसी के साथ ग्रचानक ढेर-सा खून उगल दिया···फिर रात-भर सो नहीं सकीं—सुबह थोड़ी देर हालत संभली··· राजू को संकेत से बुलाकर ग्रपने सीने के साथ लगाया···फिर उसका हाथ विनोद के हाथ में देकर बिना कुछ कहे जरा-सा हाथ उठाकर सदा के लिए ग्रांखें मूंद लीं···नर्स ग्रौर डाक्टर देखते ही रह गए—राजू मां से लिपटकर फूट-फूटकर रोने लगा···कुछ देर वह रोता रहा···विनोद भी रोता रहा ग्रौर फिर विनोद ने ग्रपने ग्रांसू पोंछकर उसे सीने से लगा लिया।

शहर में ग्राकर विनोद को कमला देवी के वकील से पता चला कि कमला देवी पहाड़ जाने से पहले एक वसीयत द्वारा ग्रपनी जायदाद का बंटवारा कर गई हैं···ग्राधी राजू के नाम ग्रौर ग्राधी विनोद के नाम··· उन्होंने विनोद को बेटे के समान ही समझा था ग्रौर विनोद ने भी इस घर में प्रवेश करते ही जिस परिश्रम ग्रौर स्नेह तथा सच्ची सहानुभूति ग्रौर प्यार का परिचय दिया था वह इसी ग्रात्मीयता को उजागर करता था।

विनोद की ग्रांखों में ग्रनायास ही इस स्वर्गीय महिला के प्रति श्रद्धा ग्रौर प्यार के ग्रांसू झलक ग्राए।

विनोद ने ठंडी सांस लेकर करवट बदली ग्रौर चौंककर बैठ गया···।

रात का अंधेरा दिन के उजाले में परिवर्तित हो चुका था···उसकी सारी रात जागते हुए बीती थी···इस समय ग्रांखें नींद के बोझ से दबी जा रही थीं—इस बीच वह पूरा ग्रतीत पग-पग चलकर ग्राया था···एक-



दृश्य—उसकी सारी स्मृतियां जाग उठीं थीं···फिल्म-रील के समान उसने जम्हाई लेकर सरिता की ग्रोर देखा जो जमीन पर चादर बिछाए बेखबर सो रही थी···उसका मुंह विनोद की ग्रोर था···एक कटु-सी गम्भीरता के जो चिन्ह जागते में उसके चेहरे से स्पष्ट हो रहे थे इस समय न जाने कहां लुप्त हो गए थे ग्रौर उनके स्थान पर एक प्यारा भोलापन-सा उभर ग्राया था···पता नहीं क्यों इस समय सरिता उसको बहुत ही ग्रच्छी लग रही थी···ग्राज से पहले उसने सरिता को कभी इतने ध्यान से नहीं देखा था—उसका जी चाह रहा था कि उसे यूंही देखता रहे कि ग्रचानक सरिता की ग्रांख खुल गई ग्रौर विनोद ने घबराकर ग्रांखें झुका लीं —सरिता उठकर बैठ गई।

"ऐसा लगता है रात-भर सोए नहीं ?" सरिता ने उससे पूछा।

"क्या करूं···नींद ही नहीं ग्राई रात-भर···बस, कई विचार बेचैन करते रहे—?" विनोद ने कहा।

"विचार तुम्हें बेचैन करते रहे या फिर तुम विचारों को बेचैन करते रहे—" सरिता ने कहा, "तुम चाहते तो नींद ग्रा जाती··· चलो, ग्रब उठ जाग्रो।" यह कहकर वह उठकर बाहर चली गई।

नाश्ते के बाद सरिता ने विनोद से पूछा—

"ग्रब क्या सोचा है ?"

"कुछ समझ में ही नहीं ग्राता।"

"मैं बताती हूं तुम्हें···पिताजी का हुलिया ग्रखबारों में छपवा दो···इश्तहार भी दे दो···बताने वाले के लिए हजार दो हजार रुपये के इनाम की घोषणा कर दो···इसके ग्रलावा राजेश, मोहन ग्रौर सुरेन्द्र का पता मिल सकता है···उन सब को पत्र लिख दो कि पिताजी को खोजने में वह तुम्हारी सहायता करें···कहीं न कहीं मिल ही जायेंगे। यह मुझे ग्राशा है।"

"ठीक है—लेकिन मां ग्रौर बच्चों को कहां ढूंढूं ?"

"मां ग्रौर बच्चों को हर ऐसे स्थान पर ढूंढो जहां उनके जाने की सम्भावना हो सकती थी।"

राजेश का पता विनोद के पास ही था —मोहन ग्रौर सुरेन्द्र के ऐड्रस सरिता उनके घरों से जाकर ले ग्राई। विनोद ने तीनों दोस्तों को विस्तार से पत्र लिख दिए—इस काम के बाद उसने उषा मैनशन को ताला लगाया ग्रौर वापस जाने की तैयारी करने लगा।

"ग्रब कहां जाग्रोगे ?" सरिता ने पूछा।

"यहां से तो सीधा घर ही जाऊंगा— फिर वहां से पिताजी ग्रौर मां को ढूंढने निकलूंगा।"

"एक प्रार्थना करूं—ग्रगर मानो तो।" सरिता ने धीरे से कहा।

विनोद बिना कुछ कहे उसकी ग्रोर देखने लगा—सरिता कुछ भर्राए हुए स्वर में बोली—

"विनोद ! जीवन से संघर्ष करते-करते मैं थक गई हूं—मुहल्ले वाले मेरे चरित्र पर सन्देह करते हैं—ग्रावारा ग्रौर बदचलन कहते हैं—रात तुम यहां सोए हो—बाहर ग्रजीब-ग्रजीब बातें सुनकर ग्राई हूं—मुझ में ग्रात्म-विश्वास ग्रौर निश्चय इतना दृढ़ है कि लोग मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकते— लेकिन मैं स्वयं ग्रब यहां रहना नहीं चाहती —ग्राखिर कब तक इस वातावरण में ग्रज-

शेष पृष्ठ ३४ पर


सवाल यह है ?
जनता पार्टी में कैसे लोगों का भविष्य उज्वल है ?
अपने पाव पर आप कुल्हाड़ी मार ली ? तुम में तो जनता पार्टी का बड़े से बड़ा नेता बनने के गुण हैं !
जार्ज फर्नांडीस ने पचास रेलें गिराई तब इतना बड़ा मंत्री बना. तुम ने अब तक चालीस बसें जलाई हैं. मंत्री बनने के लिये बस दस की कमी है !
चौधरी चरण सिंह के सम्बन्धियों ने सरकारी रुपये से नौ हजार की जमीन का सौदा नौ लाख रुपये में किया. मैं कभी इतना बड़ा मंत्री बना, तो कुतब मीनार तुम्हें बीस रुपये में बेच दूंगा.
पार्टी से बाहर आकर मैं अपना भविष्य उज्वल करने के लिये कदम आगे बढ़ा रहा हूं.
नेताओं की शान्ति वार्ता वाली मीटिंग से आ रहे हो ? मैं समझ गया. चाहे कुछ भी टूट जाये तुम पार्टी को नहीं टूटने दो गे.
हमारा लड़का घड़ियो की स्मगलिंग नहीं करता. उसपर इनकमटैक्स की चोरी का आरोप नहीं. लड़कियों के साथ उसकी "ऐसी वैसी" तस्वीरें नहीं पकडी गई. तुम ने कैसे सोच लिया तुम बड़े नेता हो ?
ऐसे घूर क्यों रही हो? इनकी हरकतों से पता चलता है यह बड़े हो कर जनता पार्टी के बहुत बड़े नेता बनें गे

नबी बनकर रहूंगी—मुझे अपने साथ ले चलो —मुझे केवल दो समय रोटी चाहिए और पहनने को कपड़ा—मैं तुम्हारी सेवा करूंगी।"

"सरिता—" विनोद चौंक पड़ा।

"मैं तुमसे यह प्रार्थना कभी न करती—हो सकता है इस मुहल्ले से कहीं और चली जाती लेकिन जहां भी जाऊंगी ऐसी ही नंगी और भूखी निगाहें मेरा पीछा करती रहेंगी —ऐसे भयानक वातावरण में मेरा दृढ़ निश्चय और आत्म-विश्वास कहां तक साथ देगा—डरती हूं किसी दिन इज्जत लुट गई तो वह सब कुछ जो मैं पवित्र जानकर संभाले बैठी हूं मिट्टी में मिल जाएगी—लेकिन मै जानती हूं कि तुम्हारे घर के कोने में मेरे चरित्र की महानता बनी रहेगी—क्योंकि तुम दुनिया के पुरुषों से अलग हो—" फिर उसने एक लम्बी ठंडी सांस ली और आशाभरी नजरों से विनोद की ओर देखने लगी।

विनोद चुप रहा—तो सरिता कुछ कटुता से बोली—

"तुम भी हिचकिचाते हो मुझसे?"

"नहीं सरिता—" विनोद ने ठंडी सांस भरकर कहा, "यह दुनिया वाले हर महान व्यक्ति को देर से पहचानते हैं···और जब पहचानते हैं तब वह व्यक्ति विशेष दृष्टि से ओझल हो चुका होता है···तुम्हें भी यह लोग उस समय याद करेंगे जब तुम इनसे दूर चली जाओगी···हां, सहर्ष चलो मेरे साथ ···मैं तुम्हें अवश्य ले चलूंगा।"

सरिता की आंखों में अनायास खुशी के आंसू छलक आए थे जिन्हें विनोद ने अपनी उंगली की कोर से पोंछ दिया। यह जीवन में पहले पुरुष की उंगली थी जिसने सरिता के चेहरे को छुआ था।

सरिता अपना थोड़ा-सा सामान लेकर विनोद के साथ ही उसकी कार में चली गई। मुहल्ले वाले अजीब नजरों से उसे जाते देखते रहे—

विनोद सरिता को लेकर कोठी में दाखिल हुआ···राजू अब तेरह वर्ष का सुंदर लड़का था···विनोद ने सरिता से उसका परिचय कराते हुए कहा—"यह मेरा राजू है···।"

"यह आंटी हैं ना···।" राज ने सरिता की ओर संकेत करके कहा और स्वयं ही उससे लिपट गया।

सरिता के चेहरे पर बड़ी हल्की-सी लाली आई और दूसरे ही क्षण चली गई··· विनोद हंस पड़ा और बोला—

"यह मेरी दोस्त हैं···।"

"तो क्या हुआ···अब आंटी हो जाएंगी।" राजू ने हंसकर कहा और वह एक बार फिर सरिता से लिपट गया।

सरिता ने भी प्यार से उसे भींच लिया ···उसके मन ने पहली बार यह अछूता-सा ममता का अनुभव किया था। दोपहर को राजू सरिता को बाजार ले गया और जबर-दस्ती उसके लिए कई अच्छी साड़ियां खरीद लीं।

दोपहर को विनोद लौटकर आया तो राजू और सरिता घर पर नहीं थे···विनोद को पिताजी और मां की बड़ी याद आ रही थी, वह सोच रहा था कि कब यह पंखुड़ियां मिलकर पूरा गुलाब बनेगा—इतने में सरिता और राजू बाजार से लौट आए···राजू ने सरिता के लिए ढेर-सा सामान खरीद लिया था और अब हठ कर रहा था कि वह जल्दी-से नई साड़ी बांधकर आए। और सरिता उसे टाले जा रही थी···विनोद ने हंसकर कहा—

"पहन भी आओ, बच्चे की तबियत प्रसन्न हो जाएगी।"

आखिर सरिता को राजू की हठ के सामने झुकना ही पड़ा। जब वह नई साड़ी पहनकर निकली तो विनोद देखता-का-देखता रह गया···उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि यह वही पहले वाली साधारण-सी सरिता थी···इस समय वह अति सुंदर लग रही थी ···राजू उसे देखते ही खुशी से उससे लिपट गया और बोला—

"आहा···कितनी प्यारी लग रही हैं आप···आज असली आंटी प्रतीत होती हैं···।"

विनोद ने आज पहली बार सरिता के मुख पर एक अजीब प्यारी-सी लाज की लाली देखी···विनोद उसके जीवन में आया पहला आदमी था जिसके लिए वह यों शर-मायी थी···।

ऐसे ही कई दिन बीत गए···विनोद को पिताजी और मां के बारे में अभी तक कोई सूचना नहीं मिल पाई थी···इस बारे में उसकी चिंता बढ़ती जा रही थी···। शाम को जब विनोद घर आया तो सरिता ने उसे राजेश का भेजा हुआ तार दिया···लिखा था—"तुरंत आओ···विनोद।"

"क्या बात हो सकती है?" विनोद तार पढ़कर बड़बड़ाया।

'तुम्हारा पत्र मिलने के बाद ही तार दिया है···स्पष्ट है कि मां और पिताजी की कोई सूचना मिली होगी।'

थोड़ी देर बाद सरिता और विनोद राजू को साथ लेकर कार में ही चल पड़े।

लगभग शाम को वह लोग राजेश के यहां पहुंच गए···विनोद ने किवाड़ खटखटाया ···थोड़ी देर बाद दरवाजा खुला···और··· और विनोद अनायास दरवाजा खोलने वाले कमजोर से बूढ़े से लिपट गया···।

'पिताजी···!' भावुकता से उसकी आ[...]लक उठीं और आवाज भर्रा गई।

और वह बूढ़ा खोई-खोई रिक्त-[...] आंखों से विनोद को देखता रह गया था[...] यह सचमुच उसके पिताजी थे···कुछ बो[...] के लिए उनका मुंह खुला था किन्तु ब[...] नहीं सके।

फिर पीछे खड़ा राजेश भी विनोद [...] लिपट गया···उसने बाद में विनोद [...] बताया कि लगभग छः महीने पहले उ[...] पिताजी हौनकों के समान सड़क पर घू[...] हुए उसे मिल गए थे और वह उन्हें घर [...] आया था—मस्तिक में कुछ बिकार आ ग[...] है—सोचा था कि विनोद कहीं मिल जाए [...] उसकी अमानत उसके सुपुर्द कर दें—विन[...] ने देखा राधा कितनी बदल गई थी···स[...] साड़ी में वह कितनी भली लग रही थी[...] पवित्रता की कोई मूर्ति-सी···।

रात वह लोग राजेश के यहां ही ठ[...] ···राधा ने बड़े स्नेह से उनकी आव-भ[...] की···रात-भर बीते जीवन की बातें हो[...] रहीं—राधा बहुत दिनों से माता-पिता [...] नहीं मिली थी इसलिए उनको उन लोगों [...] बाबत कुछ पता नहीं था। सुबह-सवेरे [...] विनोद, सरिता, राजू और पिताजी के स[...] कार में वापस लौट आया। चलते सम[...] राजेश और राधा ने ताकीद की मां जी [...]

रेट

मैने एक संपादक को
रचनायें भेजी—
थोक के भाव,
उन्होंने उन्हें बेच दिया
चार आने पाव!
मैं तड़प उठा,
हो गया उदास,
फौरन पहुंचा
सम्पादक के पास।
और कहा,
—आपके इस काम पर
मुझे आ रहा है ताव,
क्यों बेची मेरी रचनायें
चार आने पाव?
संपादक जी मुस्कराये,
थोड़ा शरमाये,
थोड़ा सकुचाये,
और बोले—
—आपकी रचनाओं में
दम ही कितना था?
महंगी कैसे बेचते
बाजार में
रेट ही इतना था।



खबर मिलते ही उन्हें तुरन्त सूचना दें···और कुशलता का पत्र लिखते रहा करें···।

थोड़ी देर बाद विनोद की कार सड़क पर दौड़ रही थी···उसकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था···बस अब दिल पर एक ही बात का बोझ रह गया था कि किसी प्रकार माँ और बहन-भाई मिल जाएँ तो जीवन के सारे दुःख दूर हो जाएँ।

लगभग दो घंटे के बाद उनकी कार एक छोटे से कस्बे से गुजरी···जिस रास्ते से वह जा रहे थे वहाँ इस समय काफी भीड़ थी···विनोद बड़ी सावधानी से ड्राइव कर रहा था···फिर भी अचानक एक गली में तेजी से आती रिक्शा उसकी कार से टकरा ही गई—रिक्शा उलट गई और रिक्शावाला झटके से उछलकर दूर जा खड़ा हुआ···उसने बड़ी फुर्ती से अपने प्राण बचाए थे वरना शायद कार के नीचे आ जाता और यह भी सौभाग्य की बात थी कि रिक्शा खाली था···विनोद हड़बड़ाकर कार में से नीचे उतर आया···दूसरे ही क्षण रिक्शावाले ने फुर्ती से पास आ कर विनोद का गिरेबान पकड़ लिया···एकाएक वहाँ भीड़ इकट्ठी हो गई···विनोद ने बौखलाकर अपने-आपको छुड़ाने का प्रयत्न करते हुए कहा—'अरे···अरे···यह क्या करते हो?'

'···को समझा रहा हूं···कि कार चलाते समय अंधे होकर कार मत चलाया करो।' रिक्शावाला चिल्लाया। फिर रिक्शावाले का तना हुआ घूंसा उठा ही था कि अचानक सरिता ने उसकी बांह पकड़ ली और डांट कर बोली—

'शिष्टता से बात करो···तुम्हारा जितना नुकसान हुआ है वह ले लो···किसी शरीफ आदमी का अपमान करने की क्या जरूरत है।'

रिक्शावाले ने एक झटके से मुड़कर सरिता की ओर देखा और सन्नाटे में खड़ा रह गया···विनोद भी उसको पहचानने का प्रयत्न कर रहा था···अब सरिता भी बड़े ध्यान से उसको देख रही थी। रिक्शावाले ने एकाएक विनोद का कालर छोड़ दिया और तेजी से रिक्शा की ओर बढ़ गया—सरिता ने उसे पुकारा—'ठहरो···सुनो···।'

रिक्शावाले ने सरिता की ओर मुड़कर देखा···उसकी आंखें भीगी हुई थीं···वह कटु-सी मुस्कराहट के साथ बोला—'तुम्हारे कहने से क्षमा तो कर दिया दीदी···मुझे नुक्सान भी नहीं चाहिए।'

विनोद बेचैन होकर रिक्शावाले के पास आ गया और भारी आवाज में बोला···'भैया···!'

'विनोद भैया···।' रिक्शावाले की आवाज भर्रा गई।

'मेरे भैया···।'

विनोद और रिक्शावाला पागलों के समान एक दूसरे से लिपट गए···राहगीर आश्चर्य से यह अनोखा दृश्य देख रहे थे···रिक्शावाले ने कार के अन्दर झाँककरदेखा और खुशी से उछल कर बोला—

'क्या पिताजी हैं यह···भैया?'

'हां···तुम बताओ···मां जी और बहनें कहाँ हैं?'

'वह लोग भी हैं भैया···मेरे साथ हैं।'

'हे भगवान···तेरा लाख-लाख शुक्र है।'

> ● एक मित्र, 'मेरी बीबी अपने पिछले पति के बारे में ही बातें करती है। मुझे बुरा लगता है।
>
> दूसरा मित्र, 'मेरी हालत तो और भी बुरी है! मेरी पत्नी तो अपने भावी पति के बारे ही में बातें करती रहती है।'

विनोद फिर रोता हुआ कमल से लिपट गया···सरिता की आंखें भी भीग गई थीं···अब पिताजी भी कार से उतर आए थे आंखें फाड़-फाड़कर दोनों को देख रहे थे जैसे कुछ पहचानने का प्रयत्न कर रहे हों—एका-एक उन्होंने झपटकर दोनों को लिपटा लिया और फूट-फूटकर रो पड़े।

'तो फिर तुम क्या सोच रही हो बेटी?' पिताजी ने ध्यान से सरिता को देखकर कहा, 'मुझे तो ऐसा लगता है जैसे तुम इस घर की रोशनी हो···विनोद का भाई, बहन और मां···सब तुम्हें देवी समझते हैं···एक महान देवी।'

'नहीं पिताजी···मैं तुच्छ किस योग्य हूं··और इस घर को मैं अपना ही घर समझती हूं···एक आत्मीयता अनुभव करती हूं यहाँ के हर व्यक्ति के साथ।'

'बेटी···!' पिताजी ने कहा, 'अगर तू इस घर को अपना ही घर समझती है तो एक उपकार और कर बेटी···वह यह कि विनोद को अपना ले···बड़े दुःख झेले हैं उसने।'

सरिता ने आंखें नीचे झुका लीं और एक संकोच-भरी लालिमा उसके गालों पर फैल गई···पिताजी ने क्षण-भर रुक कर कहा—

'बेटी—जब तक तू विनोद को स्वीकार नहीं करेगी हमारे मन को चैन नहीं आएगा।'

तभी मां भी वहां आ गयी···पिताजी की बात सुनकर उन्होंने सरिता को सीने से लिपटा लिया और हसती हुई बोलीं—

'आपने तो मेरे मन की बात कह दी।'

सरिता लाज से दोहरी हो गई···फिर झिझकते हुए बोली, 'अपने माता-पिता के बाद में आप ही को अपना सबकुछ समझती हूं···।

फिर···एक सप्ताह बाद···ऊषा मैंनशन एक बार फिर जगमगा उठा···वही चहल-पहल, वही गहमागहमी···पुराने स्थाई अतिथियों में लगभग सभी सम्मिलित थे···कमी थी तो केवल दादाजी और दादी की जो विनोद के होते ही स्वर्गवास हो चुके थे···इन सबको विनोद ने हठ करके स्वयं ही आमंत्रित किया था···वह रिश्तेदारों से सम्बंध रखने के विरुद्ध नहीं था···केवल एक नियम और संयम चाहता था···जिससे किसी पर अनुचित बोझ न पड़े।

ऊषा मैंनशन बिजली के प्रकाश में जगमगा रहा था···शहनाई बज रही थी···बाहर शामियाना लगा था और बहुत से अतिथि जमा थे···।

विनोद और सरिता पति और पत्नी के रूप में एक-सूत्र में बंधे मंडप में बैठे थे—■

राजनीतिक संकट का दीवान हल

आज राजनीतिक पार्टियों में बिखराव आ रहा है। भारत की दो प्रमुख पार्टियां जनता पार्टी और कांग्रेस आई टूट रही हैं? आखिर इसका हल क्या है। हमने एक अनूठा हल खोज निकाला है। यदि नेता लोग इन पर अमल करें तो टूटी पार्टियां फिर जुड़ेंगी और ख़म ठोंक कर मैदान में आ सकती हैं।



मुकाबला-ए-कव्वाली

मधुलिमिये मोरार जी के पुत्र कांति देसाई पर प्रेस बयान द्वारा आरोप न लगायें। दोनों दल एक जगह इकट्ठे होकर कव्वाली मुकाबले में आरोप व आरोप का खंडन करें। इससे जनता का मनोरंजन भी होगा और संगीत के पुट के कारण नेताओं में कड़वाहट भी उत्पन्न नहीं होगी।

लाल मिर्चों का फाका

हर जनता पार्टी मेम्बर अपनी जेब में पिसी हुयी लाल मिर्चें रखे। जैसे ही राजनारायण बोलने के लिये मुंह खोलें मुट्ठी भर मिर्च राजनारायण के मुंह में झोंक दें।



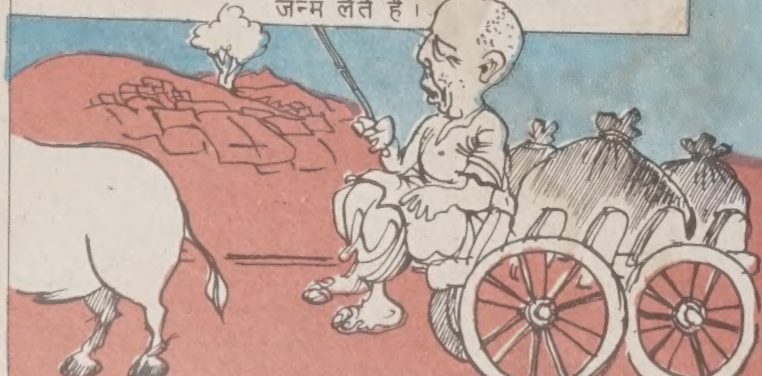


दे दाता के नाम पर

जार्ज फर्नान्डीस और मधु दंडवते रेलों में अंधे और लंगड़े बनकर मुसाफिरों से भीख मांग-मांग कर पैसे इकट्ठे करें। साल भर में जितने पैसे इकट्ठे हों उन्हें रेलवे कर्मचारियों में बोनस के रूप में बांटा जाये।

भारत भ्रमण

चौधरी चरण सिंह बैलगाड़ी पर भारत भ्रमण करें। जहां-जहां जायें वहाँ लोगों से टुथब्रुश की जगह नीम की दातुन करने का प्रचार करें। चौधरी चरण सिंह इस तरह दिल्ली से बाहर ही रहेंगे और अधिकतर बखेड़े दिल्ली से ही जन्म लेते हैं।





ओकापी

कर्पूरी ठाकुर ने एक ही काम किया, पिछड़ी जातियों के लिये नौकरियों में २८% जगहें सुरक्षित कर दीं। कर्पूरी को एक ओकापी (ओकापी २८% जेबरा जैसा व ७२% गधे जैसा जानवर है) की पीठ पर बांध कर नेपाल के तराई के जंगलों में छोड़ दिया जाये।



चौ० देवीलाल अपने रिश्तेदारों और परिवार वालों को मिलकर एक नौटंकी बनायें और हरियाणा के गांव-गांव में जाकर नौटंकी प्रोग्राम पेश करें। उनका दिल लगा रहेगा और अपनी पार्टी की सरकार तोड़ने का समय नहीं मिलेगा।

कोर्ट-मार्शल

अटल बिहारी बाजपेयी तथा अडवाणी को निकरें पहना कर उस ग्राउंड में खड़ा कर दिया जाये जहां सुबह-शाम आर. एस. एस. की परेड होती हो और उनके सिर पर किसी जनसंघी लाला के गोदाम से पकड़ी सीमेंट की चालीस किलो की बोरी लाद दी जाये। रोज दोपहर को तीन घन्टे उन्हें इसी तरह खड़ा रखा जाये जब तक उनके दिमाग से पुराना जनसंघी भूत न निकल जाये!







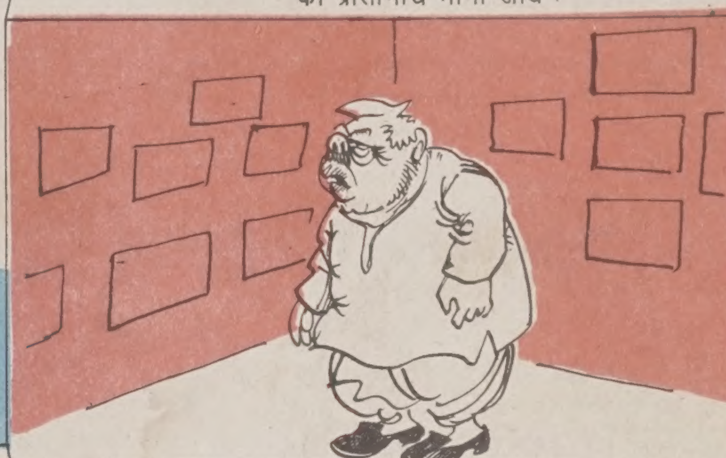
बिन-मसाला डोसा

मद्रास में करुणानिधि व रामचन्द्रन में लड़ाई है। दोनों स्वयं को अन्ना दुरै का वारिस मानते हैं। बड़े-बड़े दो डोसे बना कर करूणा व रामचन्द्रन को उसमें लपेटा जाये और मैरीना बीच के पास के समुद्र में फेंका जाये। जो सबसे पहले किनारे लगे उसे ही असली द्रविड़ पार्टी का प्रतिनिधि माना जाये।

पूह-पूह इलाज

नों कम्युनिस्ट पार्टियों के जनरल सैक्रेटरियों को बिरला
म्पनी के किसी मिल की चिमनी के मुंह के पास
स्सियों से बांधा जाये। उन्हें तब तक वहां से न छुड़ाया
ये जब तक वह अपने मत भेदों को निपटा न लें।





फोटो प्रदर्शनी

बाबू जगजीवन राम विदेश यात्रा पर निकलें। दुनिया के हर शहर की फोटो प्रदर्शनियों को देखकर लौटें। सुरेश राम भी साथ जावे तो सोने पर सुहागा रहेगा।



इन्दिरा गांधी व देवराज अर्स चिकमगलूर के बाजार में गोल गप्पे खाने की प्रतियोगिता आयोजित करें। जो ज्यादा गोल गप्पे एक घंटे में खा जाये वही जीता। दूसरे को विजेता नेतृत्व स्वीकार करना होगा।



सुरिन्दर 'जमशेदपुरी'—मणिपुर : गरीब चन्द जी आपके पास हमारे प्रश्नों के उत्तरों के इतने भंडार उपलब्ध हैं। फिर आप किस बात के गरीब हुए ?

उ० : अमीर होता तो किसी के सवालों के जवाब ही क्यों देता ? जवाब देने के लिए ही गरीब बना हूं।

मुन्ना बाबू विद्यार्थी—कानपुर : गरीब चन्द जी क्या आपने कभी क्रिकेट का मैच खेला है, यदि हां तो कब ?

उ० : बचपन में खेला था। एक बार मैं १ छक्का मारने के लिए बल्ला घुमाना ही चाहता था कि मैं लड़खड़ा गया और बल्ले के नीचे दब गया। बड़ी मुश्किल से बचा ! तब से बस कमेंट्री ही सुनता हूं।

हरीश कुमार अरोड़ा—जयपुर : गरीब चन्द जी, आप, हम सब पाठकों के ढेर सारे प्रश्नों के उत्तर अकेले कैसे देते हैं ? आपका दिमाग है या कम्प्यूटर ? क्या मैं आपका सहायक बन सकता हूं ?

उ० : आजकल जमाना बुरा है। पार्टनरशिप करना खतरे से खाली नहीं है। मैंने अभी तक सी० आई० ए० वालों को भी यह पता नहीं लगने दिया कि मैं प्रश्नों के उत्तर कैसे देता हूं।

अभिमन्यु मिश्रा—बम्बई : मेरे घर वाले कहते हैं बेटे खूब कमाओ और मैं इतना कमा नहीं सकता तो क्या करूं ?

उ० : आप घर वालों से झूठ मूठ कह दीजिए मैंने बहुत पैसे जमा किए हैं। फिक्स्ड डिपॉजिट में दस लाख रुपये जमा हैं। (लाटरी निकलने का ढौंग भी रच सकते हैं) अब घर वाले कुछ कहेंगे तो कहिए मेरे पास इतना पैसा है मैं किसी को क्यों मुंह लगाऊं मेरे से कोई बात न करे मेरे पास टाईम नहीं है।

करुणा पाण्डेय—बम्बई : सिगरेट पीने की आदत पड़ गयी है। और छूटती नहीं तो क्या करूं ?

उ० : आप थाने जाकर थानेदार को झाड़िए, उसे खरी खोटी सुनाइए। आप अन्दर हो जायेंगे, कुछ दिनों बाद जब सिगरेट मिलेगी नहीं तो अपने आप छूट जायेगी।

प्रशान्त कुमार—जबलपुर : गरीब चन्द जी क्या आप बता सकते है कि वकील लोग काला ड्रेस क्यों पहनते है और डाक्टर लोग सफेद ड्रेस क्यों पहनते हैं।

उ० : वकील लोग सफेद झूठ बोलते हैं इस लिए कंट्रास्ट के लिए काले कपड़े पहनते हैं। डाक्टर मरीजों का खून चूस मरीजों को सफेद बना देते हैं इसलिए कपड़े भी सफेद पहनते हैं।

सुरिन्दर सिंह बबलू 'गंभीर—मनीपुर : डीयर गरीब चन्द जी, आपकी बिरादरी वाले कौन से कपड़े ज्यादा कुतरते हैं। टेरीकोटन या सूती ? पूछ कर बताइएगा।

उ० : आजकल चूहे ही हैं जो खालिस माल खाते हैं अतः हमें सूती ज्यादा पसन्द हैं। टेरीकॉट मिलावटी माल है।



सीमा बानो—नागौर : गरीब चन्द जी, क्या कभी आपको ऐसा चटपटा पत्र प्राप्त हुआ है जिसे देखकर आपका दिल, उत्तर देने के बजाय कुतरने को हुआ हो ???

उ० : कभी-कभी आपके पत्र जैसा ही चटपटा पत्र मिलता है कि खुशी की सीमा ही नहीं रहती ! ऐसे में मैं कुतरना भी भूल जाता हूं।

प्र० : डीयर गरीबचंद मैं जब भी आपको पत्र लिखने लगता हूं मेरे पैन की स्याही खत्म हो जाती है अथवा पैन खराब हो जाता है क्या आप वाकई इतने मनहूस हैं ?

उ० : आप सरकारी कारखाने के बने पैन प्रयोग करते होंगे। सरकारी कारखाने के पैन जब मर्जी हड़ताल पर चले जाते हैं।

एस० एम० आलमगीर—हजारीबाग : गरीब चंद जी, क्या आप सत्य में गरीब हैं ?

उ० : शऽऽऽ ! यह बात आयकर वालों को न पता चल जाये। रिश्वत के तौर पर आपके पत्र का उत्तर दे रहा हूँ।

जी० डी० किशन—बरेली : आपके बिरादरी वाले देश में प्रतिदिन लाखों करोड़ों रुपये का अनाज वगैरह नुकसान कर रहे हैं, बताइए तुम्हारे ऊपर कौन सी धारा लगाई जाये ?

उ० : वही धारा जो मंत्रियों पर लगा सकते हैं आप। मंत्री लोग खरबों रुपये का कब्जा कर रहे हैं।

दीपक सक्सैना—शाहाबादी : गरीब चंद जी क्या आप नहीं चाहते कि आप अमीर चन्द बनें।

उ० : नाम बदलने से कहीं किस्मत बदलेगी। आप ही अपना नाम दीपक से बदल सूरज रखें तो ही कौन से अपनी किस्मत ज्यादा वोल्टेज से चमकेगी।

प्रहलाद जसवानी, कृष्ण कन्हैया—मण्डला : क्या यह दुनिया अमीर आदमियों के लिए है ?

उ० : हमें तो इस बात पर शक है कि क्या यह दुनिया आदमियों के लिये है ?

मोहन प्रकाश अग्रवाल—ग्वालियर : गरीब चन्द जी, आपका बिरादरी भाई 'यतीमचन्द' आपकी याद में मटका-मटका भर आंसू बहा रहा है, क्या करूँ ?

उ० : उन आंसुओं को सुखा कर नमक बना लीजिये और ग्वालियर साल्ट के नाम से बेच कर अमीर बन जाइये। तथा मुझे दुआएं दीजिए।

आफताब अहमद—सीकर : गरीब चन्द जी मैं दूसरे के साथ भलाई करना चाहता हूं। मगर मुझे भलाई का जवाब बुराई से मिलता है। ऐसा क्यों ?

उ० : आजकल लोग भलाई की आड़ में दूसरों के कपड़े उतार लेते हैं इसीलिए प्रायः लोग भलाई करने वालों को शक की नजर से देखते हैं इसमें न आपका कसूर है और न दूसरों का। सभी चोट खाये हैं।

गरीबचन्द की डाक
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२